FRONTLIST

SEPTEMBER 2022

‘Virtual Delhi Book Fair 2022’

हिन्दी दिवस समारोह

इस बार

प्रगति विचार ‘हिंदी में’

14 सितंबर 2022

आइए सुने हिंदी प्रकाशकों से हिंदी भाषा का महत्व

नई वाली हिंदी | प्रभात प्रकाशन | Penguin Random House India | PRATHAM BOOKS | maplepress

WELCOME MESSAGE

Dear Frontlist Readers,

Kudos to the solidarity you have shown us and the unconditional love you've provided us throughout our journey. Today, Frontlist Media is shimmering like a star in the Indian Publishing Industry. And all credit goes to each one of you.

Every month, we try to think of something new to pique your interest in literary pursuits. We celebrate 'Hindi Diwas' in September on the 14th of the month. At Frontlist, we are using this opportunity to flaunt that even if we are moving towards western culture, our hearts remain Indian, in which Hindi has a special place. We don't care whether it's labeled as the national language or not; it will always be an essential part of our identity and culture. To commemorate the relevance of the Hindi language, we've featured various Hindi publishers who discussed pivotal aspects of the Hindi publishing world this month. We have chosen to stay away from the national language debate and let the political leader do political discussion. We care about literature!

We also exclusively feature the India Book Market Report 2022 by Nielsen BookScan Data and the Federation of Indian Publishers and a special interview with the key leaders behind it. This report will bring key insights into the current and future of the Indian publishing and books industry. The Report will be launched in September.

On the occasion of Hindi Diwas, we are announcing a unique event for the first time—PragatiE Vichaar Hindi Diwas 2022, which will also be integrated with the Virtual Delhi Book Fair 2022 from 13th to 17th September. Gear up to experience insightful conversations with Hindi authors to inculcate the love of Hindi as a language.

The last but significant thing to be highlighted is that the PVLF Author Excellence Awards 2023 are still open for nominations in various categories. The nominations are closing soon, and we've already crossed our last year's entries and are hoping to take a giant leap in 2023. Hurry up, authors, don't let this opportunity slip away from your hands.

Thank you so much for standing with us throughout our fantastic journey. We need your unwavering support for smooth sailing, as, without readers, Frontlist is soulless.

Keep reading the Frontlist Space :)

Write to me : navita@frontlist.in

Navita Berry
Business Head

CONTENT

05

हिन्दी दिवस स्पेशल

- पूनम मित्तल
- प्रभात कुमार
- शैलेश भारतवासी
- हिमांशु गिरी
- वैशाली माथुर
- अदिती माहेश्वरी

17

Exclusive Coverage:
India Book Market Report 2022- Nielsen Bookscan Data & FIP

21

Publishing Talks & Tales :
Dreamland New Release for kids

23

Media Coverage:

- Soft Launch : Bringing India to Indians (and the World) : New series of Illustrated books by Shiv Kunal Verma at Pondicherry Literature Festival
- Book Launch: “Seven Immortals” Immortality : Boon or Curse by Shalini Modi, organised by Oxford Bookstores
- Book Launch: 'Pioneers of Modern India' - Eight-title monograph series, organised by Niyogi Books
- Book Release : ‘The Guru - Guru Nanak’s Saakhis’, by Author Rajni Sekhri Sibal, organised by Story Mirror
- PubliCon 2022 and Publishing Awards, organised by the Federation of Indian Chambers of Commerce & Industry (FICCI)
- पुस्तक लोकार्पण: ‘कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए’ और ‘तेरह हलफ़नामे’ द्वारा अलका सरावगी, वाणी प्रकाशन
- आज़ादी के 75वें वर्ष में श्री अरुण माहेश्वरी को प्रकाशन उद्योग में योगदान हेतु ‘कैरेक्टर–ट्री’ सम्मान
- Book Launch: "MY SILK ROAD: The Adventures and Struggles of a British Asian Refugee" by Ram Gidoomal, organised by CottonConnect

36

Author's Interviews:

- Rajesh Talwar
- Amish Tandon
- Atul K Thakur
- Priya Hajela
- Mynoo Maryel
- प्रतीक भारत पालोरी
- हरकीरत सिंह ढिंगरा

47

Frontlist Special:

- Spotlight Session - Azadi ka Amrit Mahotsav : 75 Years of Book Publishing in India

Frontlist
Volume 2, Issue No. 9 - September 2022
Editorial & Publishers Office: Frontlist Media, 4259/3, Ansari Road, Darya Ganj
New Delhi - 110002, India
Tel: 9711676777
Email: media@frontlist.in
Website: www.frontlist.in

Business Head: Navita Berry
Co-founder: Pranav Gupta & Kapil Gupta
Designed by: Frontlist Media

Published & Printed by Mr. Pranav Gupta on behalf of Frontlist Media, Printed at Mohit Enterprises, 1-2-3, 1st Floor, Bldg. No. 2919, Sir Syed Ahmed Road, New Post Office, Darya Ganj, New Delhi - 110002

We stand indemnified against any claims arising directly or indirectly from the publication or non- publication of an advertisement. All rights reserved. No part of this magazine may be reproduced without the prior permission of the publisher. All trademarks and trade names mentioned in this magazine belong to their respective owners.

Frontlist does not take responsibility for returning unsolicited publication material. All disputes are subject to the exclusive jurisdiction of competent courts and forums in Delhi/New Delhi only. Opinion expressed in the articles are of the authors and do not necessarily reflect those of the editors or publishers. While the editors do their utmost to verify information published, they do not accept responsibility for its absolute accuracy.

हिन्दी दिवस

के अवसर पर हिन्दी प्रकाशकों
के साथ विशेष साक्षात्कार!

हिन्दी दिवस स्पेशल

पूनम मित्तल

प्रबंधन निदेशक, मेपल प्रेस

श्रीमती पूनम मित्तल मेपल प्रेस प्रा० लिमिटेड की मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। वे प्रकाशन के क्षेत्र में कई वर्षों से कार्यरत है। वे NIt Surathkal से इंजीनियरिंग स्नातक है एंवम G.K. Publishing (P) Ltd की डायरेक्टर भी रह चुकी हैं।

सोशल Entrepreneur होने के नाते वे शिक्षा के क्षेत्र में सस्ती व अच्छी किताबें प्रकाशित करके अपना योगदान देना चाहती है।

फ्रंटलिस्टः मेपल प्रेस ने हिन्दी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए नए जमाने के हिन्दी लेखकों को कैसे एक मंच प्रदान किया है?

पूनमः मेपल प्रेस ने pblishing.com नाम से एक ई–कार्मस पोर्टल बनाया है जिसमें नए लेखकों को अपनी पुस्तकों को प्रकाशित करवाने के लिए पुस्तकों का प्री–आर्डर देना होता है। इसके लिए न तो उन्हें अधिक प्रतीक्षा करनी होती है और न ही उनकी कृति के अस्वीकृत होने का भय होता है। मेपल प्रेस का पूरा प्रयत्न नयी कृतियों को प्रकाशित करने का होता है।

फ्रंटलिस्टः मेपल प्रेस ने हिन्दी और अंग्रेजी पुस्तकों के बीच पाठकों के आधार में क्या अंतर अनुभव किया है? युवा पीढ़ी के बीच हिन्दी पाठकों की संख्या बढ़ाने के लिए हम कौन से दृष्टिकोण अपना सकते हैं?

पूनमः हिन्दी के पाठकों की संख्या अंग्रेजी के पाठकों से काफी कम है फलतः पुस्तकों (हिन्दी) की लोकप्रियता पर प्रभाव पड़ता है। हिन्दी पुस्तकों की ओर पुस्तकालयों का रुझान बढ़ा है। प्रेरणादायक तथा स्वप्रेरित करने वाली पुस्तकों (motivational books, sefl help books) की माँग अधिक है। युवा पीढ़ी में कविता एवं कहानियाँ लिखने का जोश पाठकों के जोश से अधिक है। टी.वी. और मोबाईल अधिकांश समय ले लेता है। आज की पीढ़ी के बीच हिन्दी का पठन बढ़ाने के लिए पुस्तकों को रुचिकर, आकर्षक, रंगीन तथा ग्राह्य बनाना होगा।

प्राथमिक शिक्षा हिन्दी में देनी होगी जिसके लिए सरकार कार्यरत है।

फ्रंटलिस्टः अधिकांश माता–पिता पसंद करते हैं कि उनके बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में सीखें, जो हिन्दी पुस्तक प्रकाशन को अस्वीकार करता है। यह हिन्दी प्रकाशकों को कैसे प्रभावित करता है?

पूनमः अभिभावक यह समझते हैं कि आगे बढ़ने के लिए अंग्रेजी ही एकमात्र रास्ता है इसीलिए वे बोलचाल तथा पढ़ने में बच्चों को अंग्रेजी की ओर ही प्रोत्साहित करते हैं। परिणामस्वरूप हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकें कम बिकती हैं। हिन्दी पुस्तकों को पढ़ने में कम रुचि होने के कारण प्रकाशक भी नए लेखकों की पुस्तकें प्रिंट नहीं करना चाहते हैं।

फ्रंटलिस्टः एक प्रकाशक होने के नाते, जब आपने हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन शुरू किया तो आपको किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? क्या आपको लगता है कि आने वाले वर्षों में हिन्दी प्रकाशन उद्योग फल–फूलेगा?

पूनमः जब हमने इस प्रकाशन को प्रारम्भ किया तो हमारा यही उद्देश्य था कि हम हिन्दी में अच्छी पुस्तकें प्रकाशित करें। कागज, प्रिंटिंग, चित्रण, विषयवस्तु सभी को हमने ध्यान में रखा। पाठकों को आकर्षित करने के लिए हिन्दी की पुस्तकों का आकर्षक होना भी अत्यावश्यक था। प्रकाशन के बाद उन्हें बेचना भी बहुत मुश्किल था। 1100 का प्रिंट रन भी बिक नहीं पाता था पर हमने साहस नहीं छोड़ा और लगे रहे। हमने हिन्दी में काफी पुस्तकें प्रकाशित करी हैं।

हमारा पूरा विश्वास है कि आने वाले वर्षों में हमारी सरकार की नई नीतियों के कारण हिन्दी प्रकाशन उद्योग एक नई ऊँचाइयों को छूएगा और पाठकों की संख्या भी बढ़ेगी।

फ्रंटलिस्टः क्या आपको लगता है कि हिन्दी प्रकाशक छम्

2022 में शैक्षिक क्षेत्र में लाए जाने वाले परिवर्तनों को अपनाने में सक्षम होंगे?

पूनमः NE 2022 में शैक्षिक क्षेत्र में हिन्दी प्रकाशकों का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा देने की योजना से हिन्दी का प्रचार–प्रसार बढ़ेगा। हिन्दी प्रकाशक अच्छी और आकर्षक पुस्तकें छापकर बच्चों तक पहुँचा पाएँगे। पाठकों को एक बार आनंद आने लगेगा तो वे उससे अलग नहीं हो पाएँगे।

हिन्दी भाषा के लेखकों, कवियों का शिक्षा, सामाजिक और राष्ट्रीय जागृति में बहुत बड़ा योगदान रहा है। हम अपनी भाषा की पुस्तकों को लोकप्रिय बनाएँ यही हमारी चेष्टा रहेगी।

फ्रंटलिस्टः **हिन्दी साहित्य उत्सवों ने हिन्दी पुस्तकों और उनके लेखकों के विपणन को और अधिक सुविधाजनक बना दिया है। इस पर आपकी क्या राय है?**

पूनमः हिन्दी साहित्य उत्सव एक ऐसा मंच है जहाँ लेखक अपनी पुस्तकों का प्रमोचन (launch) करते हैं, गोष्ठियों होती हैं, अपनी बात करने का लेखकों को अवसर मिलता है। साहित्य लेखक या पठन में रुचि रखने वाले ऐसे उत्सव की ब्रेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं।

फ्रंटलिस्टः **अंग्रेजी साहित्य ने आज की दुनिया में सभी भाषाओं को पछाड़ दिया है। हम लोगों को हिन्दी किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कैसे कर सकते हैं?**

पूनमः अंग्रेजी के वैश्विक भाषा होने के कारण अंग्रेजी पाठकों की संख्या अधिक है। आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के कारण उनमें पुस्तकें खरीदने की क्षमता भी अधिक है। विदेशों में लोगों में किताब पढ़ने में अधिक रूचि होती है। यहाँ पर लोग किताब कम पढ़ते है।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि अन्य भाषाओं में पुस्तकें पनप नहीं सकतीं। दूरदर्शन तथा सोशल मीडिया में आज हिन्दी का चलन बढ़ रहा है। हिन्दी की पुस्तकों को उचित मूल्य पर आकर्षक स्वरूप में उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। इन पुस्तकों के प्रचार एवं प्रसार में सोशल मीडिया बहुत अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। इसकी पहुँच बहुत दूर–दूर तक होती है। जागरूकता अवश्य आएगी।

फ्रंटलिस्टः **हिन्दी अनुवादित शीर्षक मूल हिन्दी शीर्षकों से अधिक लोकप्रिय क्यों हैं? प्रकाशक के दृष्टिकोण से उत्तर दें।**

पूनमः इसका एक ही उत्तर है। हिन्दी की अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तकों की लोकप्रियता का श्रेय पाठकों की संख्या को जाता है। अंग्रेजी पाठक पूरी दुनिया में हैं जो कि भारत के हिन्दी पाठक वर्ग से कहीं अधिक हैं। हिन्दी पाठकों का बाजार बहुत की सीमित है। अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तक की प्रसिद्धि का यही मूल कारण है।

प्रभात कुमार

निर्देशक, प्रभात प्रकाशन

प्रभात कुमार जन्म : 27 मई, 1968, दिल्ली में।

हिंदी के प्रमुख प्रकाशन संस्थान 'प्रभात प्रकाशन' का संचालन कर रहे हैं, जो अब तक सात हजार से अधिक स्तरीय पुस्तकों का प्रकाशन कर चुका है। ISO 9001:2015 से प्रमाणित प्रभात प्रकाशन को सर्वोत्कृष्ट पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए गत अनेक वर्षों से निरंतर पुरस्कृत किया जाता रहा है। वर्ष 2000 में फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ युवा प्रकाशक पुरस्कार' से सम्मानित।

साहित्यिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा अभिरुचि के कारण हिंदी के प्रमुख साहित्यकारों, पत्रकारों तथा साहित्य–सेवियों से आत्मीय संबंध हैं। भारतीय वाङ्मय का प्रचार करने तथा हिंदी को विश्वभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने के उद्देश्य से आपने अनेक बार विदेशों में पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन किया तथा प्रवासी हिंदी लेखकों की पुस्तकें बड़ी संख्या में प्रकाशित की। वर्ष 1999 में लंदन में छठे, वर्ष 2002 में सूरीनाम में सातवें, वर्ष 2015 में भोपाल में नौवें एवं 2018 में मॉरीशस में आयोजित दसवें वि□व हिंदी सम्मेलनों में भारत सरकार के प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में प्रकाशकों का प्रतिनिधित्व किया। माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली भारत सरकार की केंद्रीय हिंदी समिति के सदस्य रहे (2014–17)।

जिस समय हिंदी की अधिकांश साहित्यिक पत्रिकाएँ एक–एक कर लुप्त होती जा रही थीं, आपने अगस्त 1995 में 'साहित्य अमृत' (मासिक) का प्रकाशन प्रारंभ किया, जो विद्वान् लेखकों और जिज्ञासु पाठकों के बीच संपर्क–सेतु का काम कर रही है।

फ्रंटलिस्टः **प्रभात प्रकाशन ने हिंदी साहित्य की दुनिया को क्लासिक हिंदी कहानियों की छवि को बदलने के लिए कैसे प्रभावित किया है?**

प्रभातः दो–तीन दशक पूर्व हिंदी में सामान्यता साहित्य की विविध विधाओं, यथा–उपन्यास, कहानी, व्यंग्य, कविता, निबंध, समीक्षा, आलोचना, रेखाचित्र, संस्मरण आदि प्रकाशित होते थे। हिंदी के प्रतिष्ठित रचनाकार प्रायः इन्हीं विषयों में लिखकर पाठकों को

उच्च कोटि का साहित्य उपलब्ध करवाते थे। सन् 1990 के आसपास प्रभात प्रकाशन ने सबसे पहले लोकप्रिय विज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित कीं। ये पुस्तकें विज्ञान परिषद्, सी.एस.आई.आर. आदि वैज्ञानिक संस्थाओं से संबद्ध वैज्ञनिकों व विज्ञान विषयक लेखकों द्वारा लिखी गई थीं। इन पुस्तकों ने एक नए प्रकार के पाठक–वर्ग का निर्माण किया, जो विज्ञान के विविध आयामों, जैसे–पर्यावरण, भौतिकी, रसायन पर प्रामाणिक किंतु सरल–सुबोध हिंदी में पुस्तकें पढ़ना चाहते थे। बच्चों में विज्ञान के प्रति अभिरुचि विकसित करने में भी इन्होंने बड़ी भूमिका निभाई। 'आओ मॉडल बनाएँ', 'आओ प्रयोग करें', 'ऐसा क्यों होता है' जैसी पुस्तकों ने बालकों में विज्ञान के प्रति आकर्षण उत्पन्न किया, क्योंकि वे सुबोध शैली में प्रस्तुत इस सामग्री का अध्ययन कर स्वयं को अंग्रेजी–भाषी छात्रों के समतुल्य बनाने के लिए उद्यत होते थे, अन्यथा वे इन विषयों से वंचित रह जाते।

ऐसे ही व्यक्तित्व विकास और सैल्फ–हेल्प विषयों पर प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकों के हिंदी अनुवाद ने भी एक बड़ा पाठक–वर्ग विकसित किया, जो अंग्रेजी में पुस्तकें होने के कारण इन्हें पढ़ नहीं पाते थे और जीवन में सफलता के नए अध्याय नहीं लिख पाते थे। शेयर बाजार, कुकरी, सैन्य विषयक तथा धर्म–राजनीति–सांस्कृतिक विषयों पर भी हिंदी के पाठकों को श्रेष्ठ पुस्तकें उपलब्ध करवाईं ताकि अध्ययन में वे किसी भी रूप में अंग्रेजी पढ़नेवाले पाठकों से पीछे न रहें।

पाठकों की अभिरुचि में इस आमूलचूल परिवर्तन का श्रेय प्रभात प्रकाशन को नहीं वरन् हिंदी के सभी प्रकाशकों को जाता है, जिन्होंने समय की आवश्यकता के अनुसार अपनी प्रकाशन नीति में यथोचित बदलाव किए।

फ्रंटलिस्टः साहित्य अमृत प्रभात प्रकाशन द्वारा शुरू की गई एक प्रतिष्ठित हिंदी साहित्यिक मासिक पत्रिका है। यह पत्रिका हिंदी साहित्य में कैसे बदलाव ला रही है?

प्रभातः एक समय जब हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिकाएँ 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', 'सारिका', 'दिनमान' बंद हो रही थी, तब 'साहित्य अमृत' का प्रकाशन प्रारंभ होना सबके लिए एक आश्चर्य का विषय था। विगत 27 वर्षों में 'साहित्य अमृत' ने लेखकों और पाठकों के बीच एक सेतु का काम किया है। किसी भी विवाद और विकृति से दूर रहकर सकारात्मकता के साथ इसने हिंदी साहित्यिक जगत् की एक सार्थक मंच प्रदान किया है, जहाँ स्थापित तथा नवोदित सब प्रकार के रचनाकार अपनी रचनाएँ प्रकाशनार्थ देते हैं और पाठक उनका आस्वादन कर समृद्ध होते हैं। पत्रिका ने स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, मीथडिया, लोक–संस्कृति, भारतीय भाषा, शौर्य, विश्व हिंदी सम्मेलन, कहानी, कविता, व्यंग्य आदि पर विशेषांक प्रकाशित किए हैं, जिन्हें पाठकों का अभूतपूर्व प्रतिसाद और प्रशंसा मिली। हर विशेषांक ने अपने आप में विषय को संपूर्णता में प्रस्तुत किया और अपार लोकप्रियता अर्जित की। पत्रिका में लंबे समय से ईनामी वर्ग पहेली प्रकाशित हो रही है, जिसमें पाठक बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं और इससे उनकी शब्द–संपदा का विकास होता है।

जब पत्रिकाएँ बंद होने लगीं तो नवोदित रचनाकारों को अपनी रचनाएँ प्रकाशित करवाने का संकट उपस्थित हो गया। ऐसे में 'साहित्य अमृत' ने 'नवांकुर' नामक स्तंभ में इन रचनाकारों की रचनाएँ प्रकाशित कर उन्हें संबल दिया, राष्ट्रीय मंच दिया। युवा रचनाकारों में लेखन की उत्कृष्टता विकसित करने की दृष्टि से 'साहित्य अमृत' ने 'युवा हिंदी कहानी प्रतियोगिता', 'युवा हिंदी कविता प्रतियोगिता' तथा 'युवा हिंदी व्यंग्य प्रतियोगिता' का आयोजन किया, जिसमें देश भर के 35 वर्ष तक के रचनाकारों ने सहभागिता की।

कुल मिलाकर 27 वर्षों की दीर्घ यात्रा में 'साहित्य अमृत' ने हिंदी के साहित्यिक जगत् को समृद्ध किया है और पाठकों को उत्कृष्ट पठन सामग्री उपलब्ध करवाकर अपना किंचित् योगदान दिया है।

फ्रंटलिस्टः नई शिक्षा नीति 2022 अंग्रेजी के बजाय पहली पांच कक्षाओं में क्षेत्रीय भाषा को शुरू करने पर जोर देती है। क्या आप मानते हैं कि यह छात्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा क्योंकि समाज का झुकाव पश्चिमीकरण की ओर हो रहा है, और अंग्रेजी भाषा की प्रमुखता भी प्रबल हो गई है?

प्रभातः नई शिक्षा नीति में प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण अंग्रेजी के बजाय क्षेत्रीय भाषा में करने के विचार को सबका भरपूर समर्थन मिल रहा है। हम किसी भाषा के विरोधी नहीं हैं पर निज भाषा, निज संस्कृति और परंपराओं पर बल देना तो अनुचित नहीं है। भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ, अंग्रेज चले गए, पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव बना रहा और हिंदी तथा भारतीय भाषाओं को हीन दृष्टि से देखा जाने लगा। स्थान–स्थान पर अंग्रेजी माध्यम स्कूल खुल गए हैं, जहाँ अंग्रेजी में शिक्षण होता है, पर भारतीयता का ज्ञान नहीं दिया जाता। जब प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने का माध्यम क्षेत्रीय भाषा या हिंदी होगी तो शब्द, विचार, परंपरा, संस्कृति स्वतः बालमन पर अंकित हो जाएँगे। दिल्ली के प्रसिद्ध सरदार पटेल विद्यालय में कक्षा पाँच तक सभी विषयों (अंग्रेजी छोड़कर) की पढ़ाई हिंदी में होती है और कक्षा छह से अंग्रेजी में पढ़ाई प्रारंभ होती है। छात्र–छात्राएँ पाँचवीं तक हिंदी में दक्ष हो जाते हैं और छठी कक्षा में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने में उन्हें कोई असुविधा नहीं होती। अनेक देश हैं, जहाँ पूरी शिक्षा वहाँ की भाषा में होती है, वे तो अंग्रेजी तक नहीं बोल समझ पाते; क्या वे उन्नत नहीं है? क्या उन्होंने ज्ञान–विज्ञान में उत्कर्ष प्राप्त नहीं किया?

अतः अब समय आ गया है कि कक्षा पाँचवीं तक हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाई प्रारंभ की जाए और शनैः.शनैः उच्च शिक्षा भी इन्हीं में हो। थोड़ा समय लगेगा, पर निरंतर इस पथ पर चलते हुए हम यह अभीष्ट लक्ष्य पा ही लेंगे।

फ्रंटलिस्टः क्या आप मानते हैं कि एनईपी 2022 शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाने के लिए हिंदी प्रकाशक अच्छी तरह से सुसज्जित हैं?

प्रभातः एन.ई.पी. 2022 में शिक्षा प्रणाली में हुए परिवर्तनों के अनुरूप अपनी पुस्तकों में यथोचित तथा अपेक्षित संशोधन करने के लिए हिंदी प्रकाशक सक्षम हैं, तैयार हैं। इस अवसर का भरपूर लाभ उठाकर श्रेष्ठ और स्तरीय नई पाठ्य–पुस्तकें विकसित कर प्रकाशक राष्ट्र–निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।

फ्रंटलिस्टः ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म ने हिंदी किताबों की बिक्री बढ़ाने में कैसे मदद की है?

प्रभातः ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म ने हिंदी पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने में अत्यंत सराहनीय काम किया है। अब पुस्तकें सुदूर क्षेत्रों में भी

आसानी से उपलब्ध हैं, जहाँ पुस्तकों की दुकानें ही नहीं थीं। पाठक अपनी रुचि की पुस्तकें घर बैठे ही कम्प्यूटर पर ब्राउज करके चुन लेते हैं और ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म से मँगा लेते हैं। सोशल मीसडिया के विस्तार के कारण भी नई प्रकाशित पुस्तकों की सूचना तत्काल प्रसारित हो जाती है और उस माँग को ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म पूरी कर देते हैं।

फ्रंटलिस्टः नीलसन बुकस्कैन डेटा के अनुसार, मूल हिंदी शीर्षकों की पुस्तक बिक्री हिंदी–अनुवादित पुस्तकों की तुलना में काफी कम है? इस पर आपका क्या ख्याल है?

प्रभातः हिंदी साहित्य में अभी भी मौलिक हिंदी पुस्तकों की माँग अधिक है। हाँ, अंग्रेजी से हिंदी में अनूदित साहित्येतर विधाओं की बिक्री आंशिक रूप से अधिक है। विदेशी लेखकों के उपन्यास हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित हुए हैं, पर उन्हें वह प्रतिसाद नहीं मिला जो अंग्रेजी या किसी अन्य विदेशी भाषा में मिला। जे.के. राउलिंग के हैरी पॉटर, विक्रम सेठ के 'ए सूटेबल बॉय', सलमान रश्दी के 'आधी रात की संतान', नोबेल पुरस्कृत सर वी.एस. नायपॉल के 'आस्था के पार', 'भारत : एक आहत सभ्यता' और 'माटी मेरे देश की' विश्व की अनेक भाषाओं में छपकर लाखों प्रतियाँ बिकीं, पर हिंदी में सामान्यता इनकी दूसरी आवृत्ति नहीं हुई। अपवादस्वरूप लुइस एल. हे की 'यू कैन हील योर लाइफ' पुस्तक की लगभग पच्चीस हजार प्रतियाँ बिक चुकी हैं।

फ्रंटलिस्टः आने वाले वर्षों में हिंदी प्रकाशन उद्योग में हम किन नवाचारों और अवसरों की उम्मीद कर सकते हैं?

प्रभातः हिंदी प्रकाशन उद्योग के सामने अपार संभावनाएँ हैं। भारत की आधी से अधिक आबादी हिंदी जानने.बोलने वाली है। अगर इसमें से मात्र एक प्रतिशत भी पुस्तकें खरीदकर पढ़ने लगे तो किसी भी अच्छी और रोचक पुस्तक की 25–30 हजार प्रतियाँ बिकना कठिन नहीं होगा। बात कुल मिलाकर ऐसा वातावरण बनाने की है, जिसमें पुस्तकें हमारे दैनंदिन जीवन का हिस्सा बन जाएँ और अपनी आय का एक निश्चित भाग हम पुस्तकों पर खर्च करें। अवसर अनंत हैं, बस केवल हमें पाठक की रुचि को ध्यान में रखना पड़ेगा। नवाचार के क्रम में पाठकों की पठन रुचि का परिष्कार करना, नए विषयों को चुनकर उन पर रोचक सामग्री प्रस्तुत करना; बाल साहित्य की अधिकाधिक सुंदर–सुचित्रित पुस्तकें भी बड़े अवसर उपलब्ध करवा सकती हैं।

फ्रंटलिस्टः लोगों को हिंदी प्रकाशन की प्रासंगिकता के बारे में अधिक जागरूक करने के लिए प्रभात प्रकाशन सोशल मीडिया का कुशलतापूर्वक उपयोग कैसे कर रहा है?

प्रभातः आज सोशल मीडिया किसी भी विषय और वस्तु के बारे में जानकारी देने का सबसे सशक्त और कम लागत वाला माध्यम है। प्रभात प्रकाशन ने इस क्षेत्र में सक्रियता से अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई है। हम अपनी नई पुस्तकों की जानकारी फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम तथा प्रभात प्रकाशन के अपने यू–टयूब चौनल के माध्यम से प्रसारित करते हैं। साथ ही विभिन्न समाचार.पत्रों के डिजिटल चौनलों जैसे–साहित्य तक, द प्रिंट आदि में पुस्तकों पर परिचर्चा करते हैं। हमारे विभिन्न पुस्तक लोकार्पण–समारोहों को हम फेसबुक, यू–ट्यूब लाइव के माध्यम से पाठकों को जोड़ते हैं, जिसके कारण पुस्तकों के प्रति रुचि भी बढ़ती है। हम सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी पुस्तकों के 'प्री–पब्लिकेशन ऑफर' ई–कॉमर्स पोर्टल्स पर प्रचारित करते हैं, जिससे पुस्तकों की माँग बढ़े।

अंत में मुख्य बिंदु यही है कि हम अपने बच्चों, परिजनों और मित्र–परिचितों को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करें। एक सुपठित व सुविज्ञ समाज ही राष्ट्र की उन्नति और प्रगति का पथ प्रशस्त करेगा। इस अमृत काल में भारतवर्ष में पुस्तकों के प्रति एक विशेष स्थान और सम्मान सुनिश्चित करना एक सजग समाज का कर्तव्य भी है और यही अभीष्ट भी है।

शैलेश भारतवासी,
निर्देशक, हिंद युग्म

हिंद युग्म के संस्थापक–संपादक शैलेश भारतवासी एक इंजीनियरिंग स्नातक हैं, लेकिन साहित्य के प्रति उनका प्यार और स्नेह बचपन से ही एक सतत यात्रा रही है। उन्होंने इंटरनेट की सॉफ्टवेयर दुनिया में हिंदी अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला को लोकप्रिय बनाने की दिशा में अपने उद्यमशीलता के जुनून को प्रसारित किया।

वे हिंदी प्रकाशन में एक नई लहर का नेतृत्व करने में बेहद सफल रहे हैं। होनहार कहानीकारों को खोजने के अलावा, वह अपरंपरागत शैलियों में कविता, कथा और गैर–कथाओं के एक तांत्रिक मिश्रण की पेशकश करने में नए आधार तोड़ रहे हैं। ऐसे समय में जब दुनिया भर में कविता प्रकाशन की दुनिया सिकुड़ रही है, शैलेश के हिंद युग्म ने नए उभरते कवियों को स्थान दिया है। हिन्द युग्म ने नई पीढ़ी के युवा लेखकों को जन्म दिया है और भारत के प्रकाशन इतिहास में एक शक्तिशाली ट्रेंडसेटर बन गया है।

फ्रंटलिस्टः 'नई वाली हिंद' आंदोलन ने युवाओं में और अधिक हिंदी पुस्तकें पढ़ने की गति को किस प्रकार उभारा है?

शैलेषः नई वाली हिंदी एक ऐसा आंदोलन है जिसने हिंदी किताबों से विमुख हो गए पाठकों को एक बार फिर से हिंदी किताबों की तरफ़ मोड़ा है। यह दौर भदेस के सेलिब्रेशन का है। इंटरनेट ने हर तरह की स्थानीय आवाज़ों को वैश्विक मंच दिया है, तो नई वाली हिंदी ने समय के इस बदलाव को पहचाना और

लिखने तथा पढ़ने वालों, दोनों को सीधे तौर पर उनकी भाषा में संवाद करने अवसर दिया। इससे हिंदी में बहुत सारे ऐसे लेखक आए जिनकी प्रतिध्वनि को विशेष तौर पर युवा पाठकों ने पहचाना और खुद को उससे जुड़ा हुआ महसूस किया। इसी का परिणाम है कि आज के समय में लाखों युवा हिंदी किताबों की तरफ़ देख रहे हैं।

फ्रंटलिस्ट: हिंद युग्म किस प्रकार हिन्दी लेखकों को उनकी कृतियों की पहचान और पहचान दिलाने में सहायता कर रहा है?

शैलेष: एक तो हिंद युग्म का दायरा वैश्विक है तो हमारे लेखकों की पहचान वैश्विक है। हिंद युग्म मुद्रित दुनिया के साथ–साथ हर किताब के ईबुक, ऑडियोबुक संस्करण भी प्रकाशित कर रहा है, जिससे नए समय के पाठक भी उस किताब को पढ़ रहे हैं। हिंद युग्म अपनी ज़्यादातर किताबों को फ़िल्म तथा वेबसीरीज़ निर्माण के लिए निर्माता–निर्देशकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। कुछ किताबों पर बनी फ़िल्में तथा वेबसीरीज़ प्रदर्शित भी हो चुकी हैं, और बहुत–सी पुस्तकों पर काम चल रहा है।

फ्रंटलिस्ट: अँग्रेज़ी किताबों की तुलना में हिंदी पाठकों की कमी अभी भी है। माता–पिता अपने बच्चों को अँग्रेजी पढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। यह हिंदी प्रकाशन के विस्तार में किस प्रकार बाधा उत्पन्न कर रहा है?

शैलेष: यह हर तरीक़े से बाधा ही है। मेरा मानना है कि हमारे देश में पढ़ने की कोई समृद्ध परंपरा कभी नहीं रही और विशेष तौर पर हिंदी भाषी क्षेत्रों में तो लगभग न के बराबर ही रही। हम सब ऐसे लोग हैं जो अँग्रेज़ी भाषा और अँग्रेज़ीयत को कुलीनता और समृद्धि से जोड़कर देखते हैं।

मेरा मानना है कि किसी भी भाषा का साहित्य (चाहे वो फ़िक्शन हो या नॉन फ़िक्शन, या इससे इतर कुछ) ऐसे लोग ही पढ़ते हैं कि जिनकी शुरुआती शिक्षा उसी भाषा में हुई हो। यानी हिंदी भाषा के साहित्य से उस व्यक्ति का जुड़ाव सर्वाधिक होगा जिसकी शुरुआती शिक्षा–दीक्षा हिंदी माध्यम में हुई हो। इसलिए हिंदी किताबों के पाठक पर्याप्त संख्या में नहीं हैं।

हिंदी को माध्यम के तौर पर न चुनने में माता–पिता का कोई दोष नहीं है, दोष हमारे देश की भाषानीति का है। यदि हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले किसी व्यक्ति को उच्च शिक्षा तथा रोज़गार के वैश्विक स्तर पर समान अवसर मिलें तो हर माँ–बाप अपने बच्चों को अपनी भाषा में पढ़ाना पसंद करेंगे। यदि हम भारतीय भाषाओं से जुड़े किसी भी कस्मि के उत्थान की बात करना चाहते हैं तो पहले हमें अपने देश की भाषानीति पर काम करना होगा।

फ्रंटलिस्ट: हमारे पास कई हिंदी प्रकाशन कंपनियां हैं, लेकिन हिंद युग्म दूसरों से कैसे अलग है?

शैलेष: हिंद युग्म कई स्तरों पर ज्यादातर हिंदी प्रकाशनों से अलग है। सबसे पहला अंतर तो यही है कि हिंद युग्म पांडुलिपियों या लेखकों का चुनाव पारंपरिक तरीक़े से नहीं करता। ज़्यादातर हिंदी प्रकाशन हिंदी की लघुपत्रिकाओं में छपी रचनाओं या संबंधित लेखकों की पुस्तकें प्रकाशित करते रहे हैं। मेरे कहने का मतलब है कि यदि कोई लेखक अपनी पुस्तक प्रकाशित करवाना चाहता था तो पहले उन्हें लघुपत्रिकाओं के संपादकों की नजर में आना होता था। लेकिन हिंद युग्म लेखकों के लिखे का सीधे तौर पर मूल्यांकन करता है और उन्हें प्रकाशित करता है।

दूसरा भारी अंतर कलेवर का है। हिंद युग्म अपनी पुस्तकों वैश्विक कलेवर में प्रकाशित करता है। परिणामस्वरूप किताब से ताज़ापन झलकता है और युवा तथा समकालीन पाठक उससे आकर्षित होते हैं।

तीसरा अंतर नई वाली हिंदी का है, जो हिंदी भाषा की तमाम क्षेत्रीय जबानों और आवाज़ों को मुख्यधारा से सीधे जोड़ता है

फ्रंटलिस्ट: एनईपी 2022 ने शिक्षा प्रणाली को बदल दिया है और क्षेत्रीय भाषाओं को महत्व दिया है। क्या आप मानते हैं कि प्रकाशन उद्योग इस नई चुनौती से निपटने के लिए तैयार है?

शैलेष: राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2022 की यह पहल स्वागत योग्य है, लेकिन मुझे लगता है कि प्रकाशन उद्योग अभी इस चुनौती को पूरी तरीक़े से स्वीकारने को तैयार नहीं है। विशेष रूप से यदि मैं हिंदी की बात करूँ तो हिंदी में अभी उस तरह के लेखन का सर्वथा अभाव है जो बच्चों के लिए ज्ञान–विज्ञान, तकनीक आदि विषयों पर किए जा रहे हों। हिंदी का ज्यादातर लेखन साहित्य–विषयक है। हाँ, यह बात जरूर है कि नई शिक्षा नीति हिंदी प्रकाशन उद्योग के लिए एक सकारात्मक माहौल जरूर तैयार करेगी और यदि सरकार अपनी नई नीति पर लंबे समय तक टिकी रही तो प्रकाशन उद्योग इस तरह के लेखक तथा पुस्तकें तैयार कर लेगा।

फ्रंटलिस्ट: सोशल मीडिया सभी प्रकाशकों के लिए खुद को सामाजिक जानकार के रूप में स्थापित करने के लिए एक नई चुनौती लेकर आया है। हिंद युग्म ने इसे एक अवसर के रूप में कैसे देखा है?

शैलेष: हिंद का जन्म ही इंटरनेट, ईकॉमर्स तथा सोशल मीडिया की वजह से हुआ है। एक पाठक से लाखों पाठकों की हमारी यात्रा सोशल मीडिया की उड़ान से ही संभव हो पाई है। हिंद युग्म सोशल मीडिया पर बहुत अधिक सक्रिय है और अपने पाठकों से निरंतर सीधा संवाद कर रहा है।

फ्रंटलिस्ट: नीलसन बुकस्कैन डेटा के अनुसार, हिंदी–अनुवादित पुस्तकों की तुलना में मूल हिंदी किताबों की बिक्री बहुत कम है। हम इस अंतर को कैसे पाट सकते हैं? कृपया अपने विचार साझा करें।

शैलेष: देखिए, पाठकों की अभिरुचि बदल रही है। पिछले दो दशकों में दुनिया भर में पढ़ने वाले फ़िक्शन से अधिक अब नॉन फ़िक्शन पढ़ रहे हैं। फ़िक्शन की खुराक उन्हें फ़िल्म तथा वेबसीरीज़ के माध्यम से मिल रही है, नॉन फ़िक्शन की खुराक भी मिल रही है, लेकिन कम मिल रही है। अभी भी उसके लिए उन्हें पुस्तकों की तरफ़ देखना होता है। हिंदी में अभी उस तरह की सामग्री की बहुत कमी है। इसलिए हिंदी के पाठक अपनी इस तरह की भूख अनुवादित पुस्तकों से मिटाते हैं। हिंदी का पाठक भी इंटरनेट के एक्सपोज़र की वजह से बहुत अधिक विकसित हो चुका है, इसलिए हमें यदि उसे अपने से जोड़े रखना है तो उसे ऐसी किताबें देनी होंगी जो उसे इंटरनेट मीडिया से अलग और बेहतर अनुभव दे सके, नहीं तो हम यह लड़ाई हार जाएँगे।

हिमांशु गिरी

सीईओ, प्रथम बुक्स

हिमांशु को प्रकाशन, बिक्री, संचालन और विपणन में 25 से अधिक वर्षों का अनुभव है। प्रथम बुक्स से पहले, उन्होंने स्कोलास्टिक के भारत संचालन की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

फ्रंटलिस्ट: **किसी भी बच्चे के जीवन में हिंदी की किताबें उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं जितनी अंग्रेजी की किताबें। प्रथम बुक्स की किताबें बच्चों को हिंदी बाल साहित्य में रुचि लेने के लिए कैसे प्रेरित करती हैं?**

हिमांशु: भारत और हिंदी भाषी क्षेत्र के संदर्भ में यह कहना अधिक उचित है कि हिंदी किताबें अंग्रेजी किताबों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। हमारे देश के बच्चे अगर तीसरी कक्षा में पहुँचकर भी अपनी कक्षा की पुस्तकें नहीं प्ढपाते (असर रिपोर्ट) तो इसका एक कारण मातृभाषाओं में उच्च गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों का अभाव भी है। यही कारण है कि नई शिक्षा नीति मातृभाषाओं पर अधिक जोर देती है और बच्चों को पाँचवीं कक्षा तक की शिक्षा मातृभाषाओं में देने की सिफारिष करती है (एनईपी 2020, अनुच्छेद 22.14)। 2004 में 'हर बच्चे के हाथ में एक किताब' पहुँचाने के लक्ष्य से जब प्रथम बुक्स की स्थापना हुई, तो निश्चित रू‍प से हमारा हर बच्चे को उसकी अपनी भाषा में किताबें पहुँचाने का लक्ष्य था और है। भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा होने के कारण निश्चित रू‍प से हमने उच्च गुणवत्तापूर्ण हिंदी पुस्तकों पर जोर दिया है। हमारे संगठन की स्थापना ऐसे समय पर हुई जब न तो हमारे पास भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य प्रकाषित करने वाले अधिक प्रकाशक थे, न ही बच्चों को मातृभाषा में पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करने वाले लोग। माता–पिता से लेकर आसपास के लोग और बहुत हद तक अध्यापक भी उन्हें अंग्रेजी पुस्तकें पढ़ने के लिए ही अधिक प्रेरित करते थे। प्रथम बुक्स ने ऐसे समय में मातृभाषाओं में पुस्तकों की कमी को पूरा करने का काम किया। मेरा घर, मेरे दोस्त, मेरा परिवार, आम का पेड़ जैसे बेहद सामान्य विषयों पर आधारित पुस्तकों से हमने बच्चों का ध्यान पढ़ने की तरफ आकर्षित किया। अपनी भाषा में इन किताबों को हाथ में लेकर, पढ़कर बच्चों को लगा ये तो हमारी अपनी कहानी है और फिर सिलसिला चल पड़ा बच्चों की प्रथम बुक्स और मातृभाषा में किताबें पढ़ने का। हमन अब तक 26 से अधिक भारतीय भाषाओं में 600 से अधिक किताबों की रचना की है। ये भाषाएँ और इतनी किताबें बच्चों की जरूरत और उनकी माँग के अनुसार प्रकाशित की गई हैं।

2015 में स्ओरीवीवर ूऐजवतलूंअमतण्वतहण्पदद्ध के जरिए डिजिटल मंच पर आने के बाद तो हमने इसमें क्रांतिकारी बदलाव देखे हैं। स्टोरीवीवर आज दुनिया का सबसे प्रख्यात डिजिटल प्लेटफॉर्म है जो कि 190 से अधिक देशों में बोली जाने वाली 310 से अधिक भाषाओं को 45000 से अधिक कहानियों के माध्यम से बच्चों और शिक्षकों तक पहुँचा रहा है और वो भी बिल्कुल मुफ्त में।

सन् 2020 से 2022 के शुरुआती महीनों तक हमने वैश्विक महामारी का जो दौर देखा, जिसमें स्कूल, लाइब्रेरी, आँगनवाड़ी साहित बच्चों की शिक्षा के सभी मार्ग बंद थे, उस समय भी प्रथम बुक्स स्ओरीवीवर के जरिए लगातार सक्रिय था। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस दौर में हमने **फाउंडेशन लिटेसी प्रोग्राम रीड / होम** के जरिए हिंदी और मराठी में बच्चों को उनकी शिक्षा स्तर और कक्षा स्तर के अनुरूप मनोरंजक पठन सामग्री प्रदान की।

इतना ही नहीं हमारा ध्यान उन बच्चों पर भी था जिनके पास या घर में स्मार्टफोन नहीं था, हमने ऐसे बच्चों के लिए मिस्ट कॉल दो, कहानी सुनो अभियान शुरू किया। इसके जरिए बेहद साधारण फोन से भी बच्चे टॉल फ्री नंबर पर मिस्ड कॉल देकर अपनी मनपसंद भाषा में कहानी सुन सकते थे। आपको हैरानी होगी कि हमारे इस अभियान को अपार सफलता प्राप्त हुई। हमारा यह प्रोग्राम अभी भी चल रहा है। अभी भी बच्चे 08068264449 नम्बर पर मिस्डकॉल देकर मुफ्त में कहानी सुन सकते हैं।

फ्रंटलिस्ट: **हिंदी प्रकाशन उद्योग में प्रकाशक अभी भी अंग्रेजी प्रकाशकों से पिछड़ रहे हैं। इस पर आप क्या सोचते हैं? क्या हम कभी हिंदी पुस्तकों को अंग्रेजी से अधिक महत्त्व देंगे?**

हिमांशु: मैं इस बात से पूर्णतः सहमत नहीं हूँ। हाँ हम यह कह सकते हैं कि हमारे चारों तरफ अंग्रेजी का बाजार और प्रचार अधिक है। अगर हिंदी भाषाएँ या क्षेत्रीय भाषाओं के प्रकाशक पिछड़ रहे होते तो पुस्तक मेलों और क्षेत्रीय बुक स्ओर पर हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की माँग इतनी अधिक ना होती। अनुवार का बढ़ता उद्योग भी हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के महत्त्व का ही द्योतक है। अगर भारत का लगभग हर बच्चा प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ टेगोर से परिचित है तो वो हिंदी के ही जरिए है, इसीलिए बांग्ला भाषा की सुप्रसिद्ध रचनाकार महाश्वेता देवी ने

कहा था, "अगर मेरी रचनाओं का हिंदी में अनुवाद ना हुआ होता तो मैं बांग्ला भाषा मात्र की रचनाकार होकर रह जाती, अगर आज मैं पूरे भारत में पढ़ी और सराही जाती हूँ तो उसका कारण हिंदी भाषा में मेरी रचनाओं का अनुवाद ही है।" फिर चाहे यह परिचय मूल भाषा के जरिए हो या अनुवाद के जरिए। मैं अकेले प्रथम बुक्स की बात करूँ तो आज हम हर साल 10 लाख से अधिक किताबें केवल हिंदी में छाप रहे हैं और क्षेत्रीय भाषाओं में भी लगभग 5 लाख किताबें हर साल प्रकाशित करते हैं। यह आंकड़ा प्रकाशन क्षेत्र में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के बढ़ते प्रभाव का ही परिचायक है।

बहुत हद तक हम हिंदी पुस्तकों को अंग्रेजी से अधिक महत्त्व दे रहे हैं। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि हम किस भाषा क्षेत्र की बात कर रहे हैं। हिंदी भाषी क्षेत्रों जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, दिल्ली में हिंदी पुस्तकों की ही माँग और बिक्री अधिक है। न्यू एजूकेशन पोलिशी जिस तरह से मातृभाषाओं पर जोर दे रहा उस आधार पर आगे हम हिंदी पुस्तकों को और अधिक बढ़ते हुए देख सकते हैं।

फ्रंटलिस्टः **नई शिक्षा नीति 2020 ने पहली पाँच कक्षाओं के लिए भाषाओं के पाठ्यक्रम की शुरुआत की। जबकि उनके माता–पिता चाहते हैं कि वे अंग्रेजी में पढ़ाई करें तो इसका बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?**

हिमांशुः हाँ मैं समझता हूँ कि जरूर पड़ेगा, नई शिक्षा नीति ने पहले पाँच कक्षाओं तक स्पष्ट रूप से से मातृभाषा /घर की भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से शिक्षा की सिफारिश की है (एनईपी 2020, अनुच्छेद 4.9)। अगर मातृभाषा में पठन संसाधन ना हो तो कक्षा में संचार का माध्यम क्षेत्रीय भाषा ही रखने का प्रावधान है (एनईपी, अनुच्छेद 4.11)। शैक्षिक मनोविज्ञान के शोध अथवा यूनेस्को की रिपोर्ट 2008 के अनुसार मातृभाषा में सीखना आसान होता है क्योंकि इसमें जानना और समझना आसान होता है। अगर कोई चीज मातृभाषा में समझी जाये तो वह लम्बे समय तक स्थायी रहती है।

लोगों के बीच यह भ्रामक धारणा है कि अंग्रेजी में पढ़ने से बच्चे अधिक सफल और विद्वान होते हैं, यही कारण है कि माता–पिता बच्चों को अंग्रेजी भाषा में शिक्षण पर अधिक जोर देते हैं। उनको लगता है कि यदि उनका बच्चा क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा ग्रहण करेगा तो पीछे रह जाएगा। अपनी भाषा में जो अपनापन है वह बहुत से जटिल विषयों को भी आसानी से समझा देती है इसीलिए नई शिक्षा नीति में स्थानीय भाषा में कई नये कोर्स शुरू करने की बात की गई है। कला से संबंधित विषयों में सीनीय कलाकारों, स्थानीय कला और संस्कृति को महत्त्व दिया जाएगा। इस तरह से बच्चे अपनी भाषा, संस्कृति के प्रति जागरूक होंगे और समाज में स्थानीय भाषा को लेकर जो हीनभावना है वह भी दूर होगी। स्थानीय भाषा की तुलना में अंग्रेजी में पढ़ने को महत्त्व देने वाले माता–पिता इसी समाज का हिस्सा हैं, जब वह समाज में बदलाव को भाँपेंगे तो उनकी स्थानीय भाषाओं के प्रति हीन भावना स्वतः ही दूर हो जाएगी। इसका सबसे अच्छा उदाहरण प्रथम बुक्स के हाल ही के अनुभव और पहल की ये झलकियाँ हैं : http://youtu.be/mCColF8hc_k राजस्थान सरकार और यूनिसेफ के एक प्रोजेक्ट के तहत वंचित समुदायों के बच्चों की शिक्षा के लिए यह पहल की गई थी। स्थानीय भाषा में पढ़ने की खुशी को आप इस वीडियो से ही भाँप सकते हैं।

फ्रंटलिस्टः **एनईपी 2022 प्रकाशकों के साथ–साथ शिक्षा प्रणाली को कैसे बदल रही है? क्या यह हमारी युवा पीढ़ी के लिए फायदेमंद होगा?**

हिमांशुः **राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारी शिक्षा प्रणाली के साथ प्रकाशकों की भाषा के प्रति रवैये को भी बदल रही है। वह हिंदी और स्थानीय भाषा में मूलभूत साक्षरता को ध्यान में रखते हुए पठन सामग्री का निर्माण कर रहे हैं।** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य 2025 तक कक्षा तीन तक के सभी बच्चों को आधारभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान सुनिश्चित करना है। एक रिपोर्ट के अनुसार कक्षा तीन के 36 प्रतिशत छात्र समझ के साथ एक पैराग्राफ भी पढ़ने में असमर्थ हैं (एनसीईआरटी 2017) और दो में से एक छात्र अपनी कक्षा की पुस्तक पढ़ने में समर्थ नहीं है (असर 2019)। भारत में मूलभूत साक्षरता की आवश्यकता का इससे अधिक प्रमाण नहीं दिया जा सकता। पिछले दो सालों में महामारी ने शिक्षा व्यवस्था को बहुत प्रभावित किया। शिक्षा व्यवस्था में अध्यापकों और छात्रों की आवश्यकता के अनुरूप नई, उपयोग में आसान पद्धति और तकनीक का प्रयोग किया गया। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) के तहत 2025 तक सभी बच्चों के लिए मूलभूत साक्षरता प्राप्त करने को अभियान बना दिया गया है। इसका लक्ष्य देश भर के स्कूलों में पढ़ने की संस्कृति का निर्माण करना है। नीति आधारित अभियान का लाभ निश्चित रूप से प्रकाशकों को मिलेगा क्योंकि इससे बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली किताबों की माँग बढ़ेगी।

यह हमारी युवा पीढ़ी के लिए निश्चित रूप फादेमंद होगा। यह सांस्कृतिक दृष्टि से जहाँ एक तरफ उन्हें अपनी भाषा संस्कृति के प्रति जागरूक करेगा, वहीं दूसरी तरफ मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने के कारण उनका ज्ञान स्थायी होगा। क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के प्रसार के कारण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

फ्रंटलिस्टः **क्या हम अगले पाँच वर्षों में हिंदी प्रकाशन के फलने–फूलने की उम्मीद कर सकते हैं?**

हिमांशुः वर्तमान युग तकनीक का युग है। अब से कुछ साल पहले तक अंग्रेजी को ही तकनीक की भाषा माना जाता था।

इससे यह डर भी बढ़ रहा था कि हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएँ सीमित हो जाएंगी पर आज स्थिति भिन्न है। तकनीकी क्षेत्र में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का दखल बढ़ा है। नई शिक्षा नीति के तहत तकनीक को दिए गये महत्त्व और दीक्षा, स्वयं आदि पोर्टलों द्वारा हिंदी भाषा में इनके क्रियान्वयन ने यह साबित कर दिया है कि आने वाले समय में प्रकाशन के क्षेत्र में भी हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। मातृभाषाओं में ई प्रकाशन का बढ़ता प्रभाव, ऑडियो किताबों का प्रचलन, ई पुस्तकालय, हिंदी गद्य कोष, हिंदी कविता कोष आदि के प्रसार आने वाले कल में हिंदी की प्रगति का सूचक हैं। तकनीकी क्षेत्र में स्थानीय भाषा के बढ़ते प्रभाव का अंदाजा हम इसी बात से लगा सकते हैं कि 2016 में अंग्रेजी भाषा में इंटरनेट का इस्तेमाल 176 मिलियन लोग करते थे जबकि 234 मिलियन लोग भारतीय भाषाओं में करते थे। 2021 में अंग्रेजी भाषा में यह आंकड़ा 199 मिलियन जबकि भारतीय भाषाओं में 536 मिलियन यानी दोगुने से भी अधिक बढ़ने की संभावना की गई थी। भारत में अगले पाँच वर्षों में हर दस नये इंटरनेट यूजर में से नौ के भारतीय भाषा में इंटरनेट इस्तेमाल करने की संभावना जताई गई है (Scope for Promoting Bhasas (भाषा) and NEP 2020, NEP Webinar on Promotion of Indian Languages, Central Institute of Indian Language, Mysore, Page 16)। प्रथम बुक्स में हमारा स्वयं का अनुभव भी यही कहता है कि हिंदी साहित क्षेत्रीय भाषाओं में हमारा प्रकाशन वर्ष दर वर्ष लगातार बढ़ा ही है। कभी भारतीय भाषाओं में हमारी पुस्तकों की बिक्री की संख्या लाख तक भी मुश्किल से पहुँचती थी, आज यह संख्या करोड़ों तक भी पहुँच जाती है। पिछले सालों में कई प्रकाशन संस्थाओं की सीापना भी हुई जो खासतौर पर हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रकाशन के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। इन सब बातों को देखते हुए मुझे लगता है कि आने वाले पाँच वर्षों में हिंदी प्रकाशन क्षेत्र में कुछ बड़ा सकारात्मक परिवर्तन देख सकते हैं।

फ्रंटलिस्टः क्या आप मानते हैं कि ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म ने पहले से बड़े सतर पर हिंदी पुस्तकों को बेचने में सहायता की है?

हिमांशुः जी हाँ, ई–कॉमर्स ने ना सिर्फ हिंदी पुस्तकों को बड़े स्तर पर बेचने में सहायता की है बल्कि इसने अन्य भाषाओं की पुस्तकों के भी प्रचार–प्रसार और बिक्री में योगदान किया है। आज लगभग सभी प्रकाशन संस्थाओं/गृहों के ऑनलाइन प्लेटफार्म हैं, जहाँ वह अपनी पुस्तकों की बिक्री के संबंध में सारा ब्यौरा देते हैं। बस उस प्लेटफॉर्म पर जाकर पाठक पुस्तक का स्टॉक देख सकता है एवं अपनी मनपसंद पुस्तक खरीद सकता है। दुकान पर जाकर पुस्तक खरीदने से, इस तरह पुस्तक खरीदना कहीं अधिक सरल है। यही नहीं ई–कॉमर्स पर पाठक के पास प्रिंट पुस्तक के साथ डिजिटल पुस्तक खरीदने का विकल्प भी है। पुस्तक की किंडल प्रारूप, ऑडियो बुक इसी का उदाहरण हैं। ई–कॉमर्स का ही कमाल है कि हम हिंदी और क्षेत्रीय भाषा की पुस्तकों को देष के कोने–कोने तक पहुँचा पा रहे हैं।

फ्रंटलिस्टः क्या हिंदी पुस्तकों की बिक्री कभी अंग्रेजी पुस्तकों की बिक्री की ऊँचाई को छू पाएगी? क्या हाल के वर्षों में हिंदी पाठकों को आंकड़ों में वृद्धि हुई है, या हम अभी भी उसी स्थान पर हैं?

हिमांशुः इस सवाल का जवाब देने से पहले हमारे लिए यह जान लेना आवश्यक है कि क्या सचमुच हमारे देश में अंग्रेजी पुस्तकों की बिक्री सबसे अधिक है? अगर हाँ, तो बिक्री के मुख्य क्षेत्र कौन से हैं? हकीकत है कि पुस्तक खरीदने वालों में अंग्रेजी पाठकों की ही संख्या अधिक है, ये वो उपभोक्ता हैं जो आर्थिक रूप से संपन्न हैं और अपने बच्चों को अंग्रेजी ही पढ़ता देखना चाहते हैं। यहाँ बच्चे स्वयं नहीं तय करते कि उन्हें क्या पढ़ना है, बल्कि उनके अभिभावक इसका चयन करते हैं। दूसरी बात यह कि भाषा विशेष में किताबों की बिक्री का आंकड़ा हर जगह एक जैसा नहीं है। यह बात तो सच है कि अंग्रेजी पुस्तकें पूरे देष में पढ़ी और समझी जाती हैं, परंतु उत्तर भारत, मध्य भारत, देश के पश्चिमी हिस्सों में अंग्रेजी के मुकाबले हिंदी में पुस्तकें खरीदने वाले अधिक हैं। हमारे 18 सालों के अनुभव से हम यह कह सकते हैं कि आने वाले समय निश्चित रूप से हिंदी पुस्तकों और क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकों की बिक्री का आंकड़ा बढ़ेगा। नई शिक्षा नीति में त्रिभाषा फॉर्मूला (एनएपी, अनुच्छेद 22.8) इस चीज को और अधिक बल देगा।

हम जानते हैं कि हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह देश के अधिकांश हिस्सों में बोली या समझी जाती है देश के 20.22 प्रतिशत हिस्से में किसी अन्य मातृभाषा के साथ हिंदी भी मातृभाषा की ही तरह प्रचलित है। 6.16 प्रतिशत हिस्से में हिंदी द्विभाषी स्थिति में है जबकि 2.60 प्रतिशत हिस्से में हिंदी तीसरी भाषा के रूप में मौजूद है। इस आंकड़े के आधार पर नई शिक्षा नीति शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी की स्थिति को बहुत बेहतर बनाएगी। देश के लगभग 70 प्रतिशत हिस्से में हम हिंदी को पहली, दूसरी या तीसरी भाषा के रूप में पाएंगे। ऐसा होने से हिंदी पाठकों के आँकड़ों में वृद्धि होना स्वाभाविक है।

वैशाली माथुर

पब्लिशर,
इंडियन लैंगविजिज़,
पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया

क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं के साहित्य को सामने लाने के लिए वैशाली माथुर पेंगुइन के इंडियन लैंगवेज़ पब्लिशिंग का कार्यभार संभालती हैं। उनका काम मुख्य रूप से हिन्दी भाषा की किताबों और लेखकों पर केन्द्रित है। हिन्द पॉकेट बुक्स के पेंगुइन से जुड़ने के साथ–साथ वैशाली ने हिन्दी के पुरस्कृत, विख्यात और लोकप्रिय लेखकों जैसे–नरेंद्र कोहली, उपेंद्रनाथ अश्क, सुमित्रानन्दन पंत, सुरेन्द्र मोहन पाठक, दत्त भारती, वेद प्रकाश और ऐसे अनेक नामों को पेंगुइन से जोड़कर और प्रकाशित कर हिन्दी प्रकाशन की दुनिया में पेंगुइन की मौजूदगी को बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। अपनी इस भूमिका में वे पब्लिशिंग प्रोग्राम से जुड़े सभी कार्यों को संभालती हैं, इसमें अनुवाद, मार्केटिंग/पब्लिसिटी और सेल्स, लिटरेरी, जेंट्स और एजेंसियों के साथ संपर्क रखना, और पेंगुइन बुक्स के लिए भारतीय भाषाओं में किताबों के राइट्स खरीदने और बेचने जैसी जिम्मेदारियाँ शामिल हैं।

इसके अलावा, वैशाली पेंगुइन मेट्रो रीड्स और पेंगुइन आनंदा जैसे इंप्रिंट के लिए फिकशन और नॉन–फिकशन को लिस्टको आगे बढ़ाने का काम भी करती हैं।

फ्रंटलिस्ट: जब से पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया ने हिंदी पॉकेट बुक्स हासिल की है, यह हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने और पाठकों के लिए इसकी प्रासंगिकता में कैसे मदद करता है?

वैशाली: हमने पूरी लिस्ट को ध्यान से देखा है और फिर पाठकों और मार्किट के हिसाब स किताबों को रीप्रिंट किया है। सम्पादकीय दृष्टिकोण से देखें तो, तीन चीज़ें की हैं हिन्द पॉकेट बुक्स की किताबों को दोबारा प्रासंगिक बनाने के लिए, एक तो किताबों के हिसाब से उन्हें नये कवर, नये फॉरमैट्स देकर दोबारा छापा है। दूसरा, जिन लेखकों की दो या दो से ज़्यादा किताबें हमारे पास हैं, उन्हें एक संग छापा है जिससे की लेखक का नाम सामने आए, और तीसरी बात ये कि हमने किताबों की पब्लिसिटी और मार्केटिंग पर काफी ध्यान दिया है। सोशल मीडिया पर हम समय–समय पर इन किताबों का प्रचार करते रहते हैं–ख़ासकर जब किसी पुस्तक का विषय प्रासंगिक हो, लेखक का जन्मदिन/जयंती हो, या उनकी पुण्यतिथि हो।

फ्रंटलिस्ट: नीलसन बुकस्कैन डेटा के अनुसार, मूल हिंदी शीर्षकों की पुस्तकों की बिक्री हिंदी–अनुवादित कार्यों की तुलना में बहुत कम है। इस पर आपके विचार क्या हैं?

वैशाली: हिंदी डिस्ट्रीब्यूटर्सज में एक बहुत सीमित प्रतिशत ही निलसन में डेटा फीड करती है, तो एक तरह से यह हिंदी किताबों का सही मापदंड नहीं है। मैंजहाँ तक देखती–समझती हूँ, यह किताब के विषय और लेखक पर निर्भर करता है कि कोई किताब कितनी बिकती है। जैसे, रामगुहा, देवदत्त पटनायक, गौरगोपालदास, सद्गुरु जैसे लिखक अब हिंदी में भी उतने ही जाने–माने है जितने कि अँग्रेज़ी में। लेकिन इनका ये सीन इनके लेखन और जिस विधा में ये लिखते हैं की वजह से है। थ्रिलर की दुनिया में सुरेंद्र मोहन पाठक आज भी बड़े चाव से पढ़े जाते हैं। प्रियम्वद, जोकी हिस्ट्री और पॉलिटिक्स पर लिखते हैं, स्वर्गीय नरेंद्र कोहली, आचार्य चतुर सेन जैसे बड़े लेखकों की किताबें लगातार बिकती हैं।

फ्रंटलिस्ट: हिंदी पॉकेट बुक्स भारत में हिंदी और उर्दू पेपरबैक में अग्रणी है। क्या पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया इसे हासिल करने के बाद न्याय कर रही है? इन पांच वर्षों में हिंदी प्रकाशन उद्योग में पेंगुइन रैंडम हाउस कहां खड़ा है?

वैशाली: हम लोगों का प्रयास यही रहा है कि हम हिंदी में अच्छी से अच्छी किताबें प्रकाशित करें। हमने पिछले कुछ सालो में पद्मश्री नरेंद्र कोहली, कवि गोपालदास नीरज, सुरेंद्र मोहन पाठक, वेदप्रकाश शर्मा, प्रियंवद जैसे जाने–माने लेखकों को तो प्रकाशित किया ही है, साथ ही नये लेखक जैसे इराटाक (लवड्रग), प्रभाकर मिश्र (एक रुका हुआ फैसला), पियूष पांडे (मनोज बाजपेयी; कुछ पाने की ज़िद) और योग गुरु धीरज वशिष्ठ (योग संजीवनी) को भी जोड़ा है। फिर अनुवाद की ज़रिए रामचंद्र गुहा, देवदत्त पटनायक और विक्रम सम्पत जैसे भारतीय लेखकों और डैनब्राउन, और डारियसफ़रू जैसे लेखकों को भी प्रकाशित कर रहे हैं। हमारी प्रकाशन सूची काफी विस्तृत है और आने वाले सालों में भी हम हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

फ्रंटलिस्ट: पुस्तकें प्रकाशित करते समय आपको किन प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

वैशाली: हम पेंगुइन हिंदी इंप्रिंट में पिछले दस साल से भी ज्यादा

समीक्षा की लिए अँग्रेज़ी अख़बारों की तुलना मे हिंदी समाचार पत्रो में जगह कम है। हालाँकि हिंदी में समाचार पत्र अंग्रेज़ी से कहीं ज्यादा हैं, इनके पाठक भी ज्यादा हैं। तो पाठकों तक किसी किताब के बारे में जानकारी देना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। इसलिए फिर हम सोशल मीडिया का इस्तेमाल ज्यादा करते हैं।

फ्रंटलिस्ट: पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया भारतीय हिंदी लेखकों को एक मंच देने की दिशा में कैसे काम कर रहा है?

वैशाली: एक प्रकाशक के तौर पैर देखें तो हमारे वही क्वालिटी की मापदंड हैं जो हमारे इंग्लिश पब्लिशिंग के हैं। हमारी यह कोशिश है कि ज्यादा से ज्यादा विधाओं में बढ़िया ढंग से इन किताबों का प्रकाशित किया जाए। इनकी पब्लिसिटी पर भी ध्यान दिया जाए। किताबों और लेखकों की बारे में चर्चा हो, ऐसा हमारा प्रयास रहता है।

फ्रंटलिस्ट: क्या साहित्यिक उत्सव हिन्दी लेखकों की साहित्यिक कृतियों को पर्याप्त रूप से बढ़ावा देते हैं, जैसा कि उन्होंने अंग्रेजी लेखकों के साथ किया है?

वैशाली: हिंदी साहित्यक उत्सवतो देते हैं, जैसे आज तक है, या जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल है। बाकी और फेस्टिवल्स क्षेत्रीय होते हैं जहाँ हिंदी भाषा कम बोली–पढ़ी जाती है। ज्यादातर फेस्टिवल्स या तो प्रांतीय भाषा में होते हैं या अँग्रेज़ी में। इसलिए आपको ऐसा लगेगा कि हिंदी को कम बढ़ाव मिल रहा है। पान्डेमिक की वजह से भी उतने कार्यक्रम नहीं हो रहे हैं जितने होते थे।

फ्रंटलिस्ट: आंकड़ों के मुताबिक, हिंदी पाठकों का आधार अंग्रेजी जितना मजबूत नहीं है। हम अंग्रेजी पाठकों के आधार के बराबर आने के लिए हिंदी पाठकों की संख्या का विस्तार कैसे कर सकते हैं?

वैशाली: आधार मजबूत है, लेकिन निश्चय ही छोटा है। हिंदी का पाठक मनोरंजन के लिए कम पढता है, और ये मार्किट प्राइस कॉन्शिय सभी है। तो हमारा प्रयास यह रहता है कि पाठक को कम दाम में अच्छी किताबें उपलब्ध कराएँ। ट्रान्सलेशन्स के माध्यम से हम इंटरनेशनल लेखकों को पाठकों तक लाते हैं। कुछ विधाएँ ऐसी हैं जिन्हें पाठक ज्यादा पढ़ते हैं जैसे राजनीति, सेल्फ–हेल्प, आदि। तो इनमें हम काफी किताबें निकालते हैं। कोशिश करते हैं कि ज्यादातर पाठकों की रूचि की पुस्तकें निकालें, सोशल मीडिया के ज़रिए उन तक पहुँचें।

अदिती माहेश्वरी

निदेशक, वाणी प्रकाशन

अदिति माहेश्वरी गोयल वाणी प्रकाशन में कार्यकारी निदेशक हैं और वाणी फाउंडेशन में मैनेजिंग ट्रस्टी हैं। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रकाशन और संपादन विषय पढ़ाती रहीं हैं। जयपुर बुकमार्क (जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल) के मूल एडवाइजरी पैनल की सदस्य हैं एवं वाणी फाउंडेशन विशिष्ट अनुवादक पुरस्कार की सचिवालय प्रबंधक हैं।

अदिति अंग्रेजी साहित्य (हंस राज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) और एमबीए (स्ट्रैथक्लाइड बिजनेस स्कूल, स्कॉटलैंड) में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त हैं और सामाजिक विज्ञान में प्री–डाक्टरल ध एम.फिल डिग्री (टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, मुंबई) प्राप्त हैं। उन्होंने पब्लिक रिलेशन और विज्ञापन में डिप्लोमा भी किया है।

फ्रंटलिस्ट: वाणी प्रकाशन ने एक ऐसा मानदंड स्थापित किया है जिसे कोई भी पार नहीं कर सकता है। हिंदी प्रकाशन उद्योग में अपनी स्थापना के बाद से आज तक क्या बदलाव आया है?

अदिती: आपने कहा कि वाणी प्रकाशन ने प्रकाशन उद्योग में नये मानदण्ड स्थापित किये हैं। इसके लिए बहुत–बहुत आभार। अपने कार्य के प्रति समर्पण रखते हुए दिन–प्रतिदिन अच्छी पुस्तकें प्रकाशित करना ही हमारा ध्येय है। यह ध्येय पिछली तीन पीढ़ियों से एक प्रतिबद्धता के रूप में विरासत के तौर पर हम सभी को आशीर्वाद के रूप में मिला है। हिन्दी प्रकाशन उद्योग में पिछले 75 वर्षों में बहुत से बदलाव आये हैं। इनमें कॉपीराइट की व्यवस्था, पुस्तकों की मार्केटिंग, साज–सज्जा, विषय–वस्तु, लेखक–प्रकाशक सम्बन्ध और साथ ही पुस्तकों के प्रचार–प्रसार में बहुत से ट्रेंड आये और गये। इन सभी के साथ, समय के साथ ताल–मेल रखना वाणी प्रकाशन ग्रुप की खासियत है।

फ्रंटलिस्टः हिंदी प्रकाशकों को अंग्रेजी प्रकाशकों के बराबर आना बाकी है क्योंकि लोग अधिक अंग्रेजी सामग्री पढ़ना पसंद करते हैं। सबसे बड़े प्रकाशन गृह के रूप में इस सामग्री के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

अदितीः जैसा की मैंने अपने पिछले उत्तर में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 के चलते, पहली पाँच कक्षाओं में भारतीय भाषाओं को शामिल करने से युवा पाठकों के बीच अपनी मातृ–भाषा के प्रति सकारात्मक बदलाव आयेगा। यह इसलिए जरूरी है , क्योंकि युवा पाठक कहीं–न–कहीं अंग्रेजी के दबाव में आकर अपनी मातृ–भाषा से दूर होते जा रहे। वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक तर्ज पर कहूँ तो मातृ–भाषा से दूरी के चलते युवा छात्र आत्मविश्वास विकास में पीछे रह गये हैं। भारत में कौशलसिद्ध और बौद्धिक छात्रों की कोई कमी नहीं हैं, लेकिन अंग्रेजी के बोल–बाले के चलते वे अपनी बौद्धिकता और कुशलता को पूर्ण रूप में न ही समझ पाते हैं, न ही प्रयोग में ला पाते हैं। जब क्षेत्रीय भाषाओं को कक्षा में आदरपूर्ण जगह मिलेगी तब हमारे युवा छात्र जीवन भर अपनी मातृ–भाषा से जुड़े रहेंगे। ध्यान दीजिए कि महानगरों मे आज भी ऐसे कई स्कूल हैं, जो अंग्रेजी में न बोलने पर छात्रों को दण्डित करते हैं। इन सभी बदलावों की आज सबसे ज्यादा आवश्यकता है।

फ्रंटलिस्टः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 ने हिंदी प्रकाशन में हलचल मचा दी है। क्या पहली पांच कक्षाओं में क्षेत्रीय भाषा को शामिल करने से सकारात्मक बदलाव आएगा? क्या हम इस नए बदलाव से निपटने के लिए तैयार हैं?

अदितीः मेरा खयाल हैं कि अंग्रेजी की पुस्तकें हमारे देश में ज्यादा पढ़ी जा रही हैं, यह एक भ्रम है। भारतीय भाषाओं में दैनिक प्रकाशन प्रणाली और उसमे लिखने–पढ़ने, विचार–विमर्श और आलोचना के जितने भी ट्रेंड हुए हैं, उनको ध्यान में रखते हुए यह कहना सही ही होगा कि हिन्दी प्रकाशकों का अंग्रेजी प्रकाशकों से कोई मुकाबला नहीं हैं। हिन्दी साहित्य अपने पाठकों के साथ पीढ़ी–दर–पीढ़ी कदम– ताल बनाये हुए हैं। यहाँ इस बात पर ध्यान देना बहुत जरूरी है कि देश की अधिकांश जनता अपनी मातृ–भाषा में सोचने–समझने में एवं अभिव्यक्त कर पाने में खुद को बिलकुल सहज पाती है। हाँ, यह जरूर हैं कि वैश्वीकरण के चलते अंग्रेजी भाषा का बोल–बाला बढ़ा है। लेकिन हम यह भी जानते हैं कि अब नयी शिक्षा नीति के तहत हिन्दी में तकनीकी विषयों पर पुस्तकें जल्द ही उपलब्ध होने वाली हैं और इसके चलते जो एक बहुत बड़ा गैप दिखता है हिन्दी एवं अंग्रेजी या फिर यूँ कहे कि अंग्रेजी एवं भारतीय भाषाओं की दुनिया में कम होने जा रहा है।

फ्रंटलिस्टः क्या आप मानते हैं कि हिंदी साहित्यिक उत्सवों ने हिंदी पुस्तकों और लेखकों को उजागर करना आसान बना दिया है?

अदितीः मैं यह बिलकुल मानती हूँ कि, हिन्दी भाषा दरअसल अपने शौष्ठव में जन–समुदाय, लोकवृत्त और चर्चा–परिचर्चा की भाषा रही है। हिन्दी के आधुनिक स्वरूप को जिसे हम आज बोल–चाल की भाषा और बौद्धिक विमर्श के लिए प्रयोग करते हैं, उसका जन्म ही सौन्दर्य और विद्रोह की कोख में हुआ हैं। इसलिए हिन्दी साहित्य जन–मानस के प्रति रुझान के साथ–साथ मानवीय मूल्यों को रेखांकित करता आया है। एक दौर था, जब हिन्दी साहित्य पर गोष्ठियाँ व साहित्यिक विचार विमर्श पर चर्चाएँ सामयिक तौर पर हुआ करती थीं। धीरे–धीरे इन कार्यक्रमों एवं आयोजनों ने साहित्यिक उत्सवों का रूप ले लिया। यहाँ ध्यान दीजिए कि साहित्यिक उत्सवों ने युवाओं को बहुत नजदीकी से साहित्य एवं लेखकों से जोड़ा है। यह भी देखा गया हैं कि महानगरों में हो रहे इन साहित्यिक उत्सवों मे हिन्दी और भारतीय भाषाएँ कहीं–न–कहीं उपेक्षित भी होती हैं। ऐसे में हिन्दी साहित्य से जुड़े सभी लोग, चाहे वे लेखक हों, प्रकाशक हों या सम्पादक, उन सभी को अपने साहित्य के प्रति गौरव की भावना को रेखांकित करना चाहिए एवं अपने साहित्य का विश्व मंच पर प्रतिनिधित्व करना चाहिए। यह भी जरुरी है कि, डिजिटल युग में हिन्दी साहित्य उत्सवों द्वारा भी लेखकों को अपने पाठकों तक किसी भी माध्यम से जुड़ने में आसानी हो। सोशल मीडिया, ब्रॉडकास्ट, ऑनलाइन कार्यक्रम, इन सभी ने यह बदलाव आसान किया है। वाणी डिजिटल मंच ने भी तीन साल पहले यह शुरुआत की थी और आज चार मिलियन आर्गेनिक फॉलोवर्स के साथ हिन्दी साहित्य और लेखकों को हम जन–जन तक पहुँचा रहे हैं।

फ्रंटलिस्टः क्या हिंदी भाषा के प्रकाशक कभी अंग्रेजी भाषा के प्रकाशकों के खिलाफ प्रमुखता हासिल कर पाएंगे? कृपया अपना पहला अनुभव साझा करें।

अदितीः आपके प्रश्न से प्रतीत होता है कि आप अंग्रेजी प्रकाशन को विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन प्रणाली मानते हैं। लेकिन आपकी जानकारी के लिए बताना चाहती हूँ कि यूरोपीयन प्रकाशन प्रणाली, जिसमें जर्मन, फ्रेंच, स्वीडिश, पोलिश, इटालियन इत्यादि, ऑस्ट्रेलियन प्रकाशन प्रणाली, जापानी प्रकाशन प्रणाली इत्यादि, दुनिया में कई गुणा ज्यादा प्रभावी एवं देशव्यापी कार्य कर कर रही हैं। इन भाषाओं में प्रकाशित साहित्य असल में दुनिया का मॉरल कम्पस बदल रहा हैं। तो हिन्दी प्रकाशकों की तुलना केवल अंग्रेजी प्रकाशकों से न होकर विश्व की बड़ी से बड़ी प्रकाशन प्रणालियों से होनी चाहिए। साथ ही इस बात को भी ध्यान में रखा जाये कि हम भारतीय भाषाओं की प्रकाशन प्रणालियों को कभी भी अंग्रेजी प्रकाशन प्रणाली से तुलना नहीं कर सकते क्योंकि ये आम जन–मानस में कई गुणा ज्यादा गहरे से जुड़े हुए हैं। चाहे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम हो या उससे पहले के सामाजिक

दोनों के निर्णय किये हैं। साथ ही स्वास्थ्य, आयुर्वेद, योग, आधुनिक जीवन, उत्तर–आधुनिक विषमताएँ, तकनीक इत्यादि के साथ कदम ताल बनाये रखा हैं। यहाँ फिर से कहना जरूरी होगा कि नयी शिक्षा नीति के तहत भारतीय भाषाओं के लिए नया सवेरा होने जा रहा है।

फ्रंटलिस्ट: डिजिटलीकरण के उद्भव के साथ, वाणी प्रकाशन को खुद को संशोधित करने के लिए किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है?

अदितीः सन 2005 से 2010 के बीच हुए तकनीकी बदलावों ने हिन्दी प्रकाशन प्रणाली को मूल रूप से बदल दिया है। यह वह समय है जिस पर ज्यादातर इतिहासकारों का ध्यान नहीं जा रहा हैं। यहाँ 2005 और 2010 के बीच में तकनीकी क्रान्ति ने हिन्दी प्रकाशन प्रणाली को न केवल बदला बल्कि उसको बहुआयामी भी बनाया। यह वह काल था , जिसमें सोशल मीडिया का उद्भव हुआ। साथ ही साथ प्रिंटिंग प्रेसों में नये इजाफे भी हुए। हम ऑफसेट से 3क, 4क प्रिंटिंग डिजिटल प्रिंटिंग, मास प्रोडक्शन से प्रिंट ऑन डिमांड की तकनीक और साथ ही साथ नये प्रकार के कागजों का प्रयोग–ये बदलाव सुखद हैं। डिजिटलीकरण के साथ वाणी प्रकाशन को किसी प्रकार की चुनौती महसूस नहीं हुई, क्योंकि हमारा मोटो ही 'सदा समय के साथ' रहना है। आप को ध्यान होगा कि 2008 में जब फेसबुक अपना पहला चरण रख रहा था उस समय हिन्दी का फॉन्ट यूनिकोड इस प्लेटफॉर्म पर त्रुटिहीन नहीं दिखाई देता था। यहाँ हिन्दी भाषा के फॉन्ट–तकनीकीकरण का उल्लेख करना जरूरी हैं क्योंकि यह आज भी सिर्फ हिन्दी नहीं अन्य भारतीय भाषाओ के लिए भी समस्या का कारण हैं। भारत सरकार से हमारा निवेदन है कि वे सॉफ्टवेयर जो हिन्दी प्रकाशन में प्रयोग होते हैं, उनके एवं भारतीय भाषाओं के फॉन्ट के बीच सामंजस्य और सुलभ करने के लिए जिस अनुसन्धान की जरूरत है, उसमें वे प्रकाशन उद्योग का सहयोग करें। हम लगभग 10 वर्षों से सभी सामग्री ई–बुक, ऑडियो–बुक और प्रचार–प्रसार के सभी डिजिटल माध्यमों पर प्रखरता से उपलब्ध कराते आ रहे हैं। पाठकों एवं लेखकों के बीच का सेतु लगभग डिजिटल माध्यम से हो सकता है, यह हमने सार्थक किया और हमें खुशी हैं कि 2009 से हम सोशल मिडिया पर आर्गेनिक रूप से अपने पाठकों के साथ जुड़े हैं। दिन–प्रतिदिन युवा पीढ़ी को अपने साथ जोड़ रहे हैं, ताकि हिन्दी के प्रति उनका आकर्षण बना रहे और लेखकों को और नजदीक से जान सके।

फ्रंटलिस्ट: नीलसन बुकस्कैन डेटा के अनुसार, मूल हिंदी शीर्षकों की पुस्तकों की बिक्री हिंदी–अनुवादित पुस्तकों की तुलना में काफी कम है। इस पर आपके विचार क्या हैं?

अदितीः यद्यपि नीलसन बुकस्कैन डाटा एक अच्छी पहल है। हिन्दी साहित्य के मामले में नीलसन बुकस्कैन के आंकड़े बहुत उपयोगी नहीं जान पड़ते। उनके आंकड़े एकत्रित करने के केंद्र में मुख्य रूप से वे काउंटर हैं, जो अधिकांश रूप से हिन्दी पाठकों द्वारा चयनित पुस्तकों के पढ़ने एवं खरीदने के केंद्र नहीं हैं। हिन्दी का पाठक यूनिवर्सिटी बुक शॉप्स, पुस्तक विक्रेताओं, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड और कुछ वर्षों से बड़े मॉल या बड़े बुक स्टोर्स पर जाते हैं। लेकिन अधिकांश पाठक विश्व विश्वविद्यालय स्थित पुस्तक केंद्र या उपरोक्त केन्द्रों से अपनी पुस्तकें प्राप्त करते हैं। यहाँ यह जानना जरूरी हैं कि नीलसन की डेटा कलेक्शन प्रणाली इन केन्द्रों पर केन्द्रित नहीं होती इसलिए डिजिटल माध्यम से हो रही पुस्तक बिक्री या कुछ बड़े पुस्तक केन्द्रों से जो आंकड़े इन्हें प्राप्त होते हैं वह उसी को आधार बनाकर अपनी रिपोर्ट बनाते हैं। इस रिपोर्ट से अधिकांश हिन्दी पाठक गायब हैं।

फ्रंटलिस्ट: क्या हम युवा पीढ़ी को हिंदी साहित्य पढ़ने के लिए राजी कर सकते हैं? क्या इसके लिए एकजुटता दिखाने के लिए वाणी प्रकाशन समूह कुछ कर रहा है?

अदितीः मुझे आपको बताते हुए खुशी हो रही है कि पिछले पांच वर्षों में युवा पाठकों का हिन्दी के प्रति रुझान 12 से 15 प्रतिशत बढ़ा है। ये आंकड़े वाणी प्रकाशन द्वारा पिछले पुस्तक मेले में एकत्रित आंकड़ों पर आधारित हैं। सोशल मीडिया के जरिये हम अपने युवा साथियों के साथ जुड़ते हैं एवं उन तक पुस्तकें पहुँचाते हैं। इसी के बाबत उनका फीडबैक भी हमें मिलता हैं। हमें 10 वर्षों पहले जो संकट महसूस होता था, जिसमें हिन्दी का युवा पाठकों तक पहुँचने का रुझान कुछ संकट में जान पड़ता था, आज उस परिस्थिति में हिन्दी एवं हिन्दी के युवा पाठक नहीं हैं। बहुत गर्व के साथ कहना है कि मैं भी एक पाठक हूँ और महीने में कई पुस्तकें खरीद कर पढ़ती हूँ। मुझे पूरा यकीन हैं कि मेरे ही जैसे उत्साही पाठक हमारे बीच मौजूद हैं और वे हिन्दी साहित्य और भाषा के प्रति उत्साहित, समर्पित और सहज भी हैं।

Hurry up Authors!

PVLF
PragatiE Vichaar
LITERATURE
FESTIVAL 2023
9th-14th Jan

WELCOME TO 2023 EDITION OF

PRAGATIE VICHAAR LITERATURE FESTIVAL

Theme: Taking Humanity Forward

NOMINATIONS FOR PVLF AUTHOR EXCELLENCE AWARDS ARE STILL OPEN!

APPLY NOW

Scan to visit the
PVLF 2023 Website

EXCLUSIVE COVERAGE

India Book Market Report 2022

The India Book Market Report 2022 aims to build an understanding of the book market and its contribution to the Indian Economy, where the Indian Publishing Industry has been a significant contributor to the global economy. The Indian publishing industry is the 2nd largest in English Book Publishing today and the 6th largest in Print Publishing. India takes pride in having an enormous book market size of $10 billion+.

The 2nd edition of this report has a mission to provide ground-breaking current data & statistics and a substantial prediction of the future of the Indian Book Market.

Below are some of the modules of the report :

- Key Facts of the Indian Book Market
- Market Size of the Indian Book Market
- Economic Contribution to the Indian Economy
- Challenges and Opportunities in the Publishing Industry.

Therefore, it would be essential and of great interest to understand the dynamics the publishing industry has witnessed since its inception. We believe that individuals, institutions, and organizations connected with Indian Book Market and Publishing Sector (professionally and aspirationally) will surely benefit after consuming this report.

Why one should buy the report?

This report is a bounteous resource for the government, Global companies interested in investing in the Indian Book Market, and the stakeholders of the Publishing industry.

The publishing industry is just a few billion dollar industry, so it doesn't get much attention from the government nowadays, especially when new Unicorns are being created every month.

The Federation of Indian Publishers decided to develop a document that spells out the economic contribution of publishing activities to the GDP. And this inspired us to enlist the services of a world-renowned credible agency like Nielsen to study the industry from this perspective.

The Indian Reprographic Rights Organization is delighted to introduce you to the 2nd edition of 'India Book Market Report,' launched in August 2022. The report is being developed and curated to provide a glass view of the 'economic contribution' made by the publishing and the literary industry. The research for the report includes primary and secondary data across the global publishing domain spectrum, and it has the experience and expertise of government officials, corporate sectors, and thought leaders.

We are thrilled about its upcoming launch and the advantages it would rightly offer to everyone connected with the Indian Book Market. Some of the benefits to IRRO and its stakeholders are mentioned below :

- The report will back the development and growth of FIP.
- It will be highly beneficial to each stakeholder in the publishing and the literary industry.
- It will help us to sign bilateral agreements with our counterparts based abroad, resulting in increased royalty for our members.

Conversation with
Pranav Gupta

Project Leader - India Book Market Report & Joint-Secretary
Federation of Indian Publishers

Frontlist: FIP has collaborated with Nielsen BookScan Data to launch Indian Book Market Report 2022. How will this report be a boon to the publishing industry, and why is this very significant to us?

Pranav: FIP's role remains crucial as we are the representatives of the Indian Publishing Industry and, therefore, act for the large set of publishing companies in the country. Recognition by the International Publishers Association adds a feather to our hat; thus, associating with FIP was imperative for Nielsen BookScan Data. This collaboration is certainly a boon for both parties. In the future, more studies will be essential where we can have Nielsen BookData as a chief associate for the Federation of Indian Publishers.

Indian Book Market Report 2022 should not be seen as theoretical but rather a more practical one, where we have underlined the various issues and challenges experienced by the industry itself. It also covers the policy support that the industry requires from the Indian government, such as support for GST, custom imports, or any copyright concerns. Owing to the evolving Publishing Industry, we needed reliable data to showcase what we can expect regarding market size and growth in the future.

Frontlist: How has the Indian publishing industry changed from 2015 to date?

Pranav: I would say "wait and watch" the situation because once we release the report, then this data will emerge in the presentations by Nielsen BookData.

Frontlist: How important is the publishing industry in the education sphere?

Pranav: A thriving educational publishing business is a critical component of a robust, knowledge-driven society in any modern democracy of the contemporary world.

The reason is that wherever you look, publishers have been entrusted with the crucial responsibility of creating the resources that teachers need to conduct high-quality instructions in any academic setup. Furthermore, the quality of the material produced helps us boost learning integrity in the school environment.

Curriculum reform requires well-crafted, up-to-date resources created by content producers with longstanding experience and exposure to curriculum planning and robust teaching and learning dialogues. Academic publishing houses in India have worked hard to make these resources available and ensure they are of the highest quality for decades.

Frontlist: Have you included the statistics from the COVID-19 period in the report?

Pranav: We have included market sizing, data modeling, the post-COVID recovery years, and the projection. We will primarily list down the COVID effect and the growth rate once we fully recover from the covid impact. Hence, these details will be a part of the report.

Frontlist: In your opinion, has the self-publishing industry become a threat to well-established publishers due to its exponential growth in recent years?

Pranav: Well, I believe self-publishing doesn't threaten well-established publishers. The scope of self-publishing is narrow and operates within limited genres. Today anyone can publish their books free of charge, and it has opened doors to small writers with a meager budget; still, Vanity Publishers has its presence in the market that no one can overpower.

Every book can't be self-published. Book publishing sifts through a rigorous process as an author shares the raw script, and a publisher gives a final touch with branding. I stand in solidarity with self-publisher as our society is evolving, and so are people.

If someone wants to break into the publishing industry, self-publishing is an apt choice.

Frontlist : If we reckon the international markets, where does the Indian publishing industry stand across the globe?

Pranav: The 2020 data includes only print, excluding any other format, because the report is primarily based on the print book market, and I understand that "digital" is creating momentum, and it's essential, but not in this report. I believe the physical facts and figures, but it's a print book. Specifically, we have collated data regarding the Market Size. Therefore, we have only done print books to compare the global market. If we ever receive any data, we will certainly include it in the future. Right now, Indian Book Publishing is the 5th largest market worldwide and the 2nd largest for English book publishing.

Frontlist: On August 15th, the Prime Minister added a new line to the slogan "Jai Anusandhan (Innovation)." How will the publishing industry be able to support this?

Pranav: If you look at innovation, the publishing world also represents innovation. The number of books accessible to readers, whether informative or entertaining, is an enjoyable product in terms of content. The content is being used innovatively in books, OTT platforms, or for many other reasons.

Our industry is sheerly associated with a thought process of innovation, and I believe there is no industry doing it the way we provide content-driven products to society. Therefore, we as an industry align with this splendid thought shared by our Hon'ble Prime Minister and fully support it.

Frontlist: What can we foresee regarding market expansion, the number of books published, and revenue generation in the next five years?

Pranav: We will have to wait for the forecast because the numbers are still underway and will be decided soon. Then we can certainly answer this. However, the Indian publishing industry is currently ranked as the fifth largest worldwide and the second largest in English language books.

I am thrilled to share that the industry is worth Rs. 73,900 crores, or USD 9.5 billion, and is burgeoning. We expect to cross Rs. 1,00,000 crores by 2024/25. This success story follows that more than 24,000 publishers brought out 1,46,000 books in 2021 in English and various Indian languages. Hence in the next five or even ten years, we foresee exponential growth in the Indian Publishing Industry.

Frontlist: What would be the price of the report for consumers? Are there any early-bird offers as well?

Pranav: The price of the report is Rs. 33,000/- for the FIP members, Rs. 50,000/- for the publishers (Non-FIP members), and Rs. 75,000/- for others.

Frontlist: How can the developing Indian Economy bring change in the Publishing world in retrospect of the past 75 years? Shall we hope to see Indian publishers rank in the top 25 list in the next 25 Years?

Pranav: If it does not happen by the time we reach 100 years of our industry, we should collectively zip ourselves. Because then, it will be not only our fault but the fault of the whole nation and the industry. There was a time when you could not imagine Indian manufacturers being in the top 10 in motorcycles and cars, but now they are. Similarly, Indian banks could not imagine being in the top 20. But now they are there since our economy is accelerating rapidly. Indian banks like HDFC Bank, ICICI Bank, and State Bank of India have done an outstanding job. Still, it is challenging for a publisher from Nepal, Pakistan, or Bangladesh to be in the top 10 because their primary market size is scanty.

Be a part of The Frontlist Show' Community!

Our very own Podcast Series

THE FRONT LIST SHOW

A judgement free place for Literary buffs to express their passion for reading and writing

Come and join us to become a part of
our dramatic conversations!

Don't forget to subscribe to our Channel

Available on :

Spotify | amazon music | Google Podcasts

Publishing Talks and Tales

Dreamland New Book Release for Kids

Dreamland Publications, India's leading Children's Publisher, obtained the rights to Warner Bros. and Mattel characters as they have a massive demand in the Indian market.

The primary objective behind this collaboration was to present the Warner Bros. and Mattel characters with a novel essence. They have published 33 titles in this first phase, including copy colouring and activity books. Through this international collaboration, they continue to be every children's favourite with this new launch.

Interview with Dreamland Publications' Directors

Aman Chawla, the Director, joined Dreamland Publications in 2003 after graduating from Delhi University. He is an intelligent, solution-focused person with sales, marketing, and operations capabilities and is looking after the export section of the company.

His sophisticated communication skills, right strategies to market the business, and utmost dedication to work have taken Dreamland Publications to the next level.

His focus has successfully led to the expansion of Dreamland Publications globally to export books to over 70 countries and in more than 25 foreign languages.

To broaden Dreamland's horizons, he regularly participates in and visits various international and domestic fairs that help him continue understanding multiple aspects of the publishing world.

Anuj Chawla, With Delhi University, Symbiosis, and Harvard as his Alma Mater, Anuj Chawla joined Dreamland Publications in 2008. He is heading production along with international sales.

As Director, he is committed to the mission of the flawless production of books. His innovative ideas and research work help him develop new products that elevate the company's growth.

His understanding of the ethics of the publishing profession and dedication towards his responsibility to provide books of excellent quality, both content and designing-wise, have resulted. Hence, Dreamland Publications has been conferred many awards and honours like the Best Children Book Publishing Award, Excellence in Publishing Award, and many more by the Federation of Indian Publishers and Federation of Educational Publishers in India.

With these awards, he has become more devoted to bringing prosperity to the education system. His regular visits and participation in various international and domestic book fairs help him shape his research to develop more innovative products for children.

DREAMLAND
CHILDREN BOOKS

Frontlist : Could you please share some details about the books? How do you use Warner Bros and Mattel's characters to design the books?

Aman and Anuj : As we have expertise in content creation for the children's books segment, we have used the designs from Warner and Mattel to create beautiful books.

Frontlist : How was your experience throughout the collaboration with Warner Bros and Mattel?

Aman and Anuj : The experience throughout designing the books was unique. The team enjoyed creating the activity books with Warner Bros and Mattel characters.

Frontlist : How's this collaboration enabling kids between the ages of 4 and 10 to explore their creativity?

Aman and Anuj : These books include mazes, puzzles, word search, find differences, dot to dot, sticker activity, colouring, mazes, puzzles, word search, drawing, etc., to educate and entertain kids along the way as their abilities improve through practice. These books are designed for little ones and help them improve their hand-eye coordination while learning through play.

Frontlist : What feedback is Dreamland Publications receiving from the consumers, specifically via this new alliance?

Aman and Anuj : The response from parents is amazing. The books are selling like hotcakes.

Frontlist : Why do we need to promote such books to children? How will such books help to augment the joy of reading in children?

Aman and Anuj : Activity books for children are a way to encourage hand-eye coordination and learn through play, and that keeps children entertained for hours.

Frontlist : What is the unique selling proposition of this collaboration? Why do you believe these books will be a boon to all children who are hesitant to venture outside owing to the rising cases of the Pandemic?

Aman and Anuj : Our idea is to make books interesting enough for children to solve them and entertain themselves when they are getting bored in their homes.

Frontlist : Nowadays, children are subsumed by the digital world. How will these books encourage children to use digital gadgets significantly less since they jeopardise their health?

Aman and Anuj : The books include interesting activities like mazes, puzzles, crosswords, search the word, colouring, drawing, and sticker activities that keep children of all ages engaged for hours. And since the books have children's favourite characters, it will make children forget the digital gadgets they are used to.

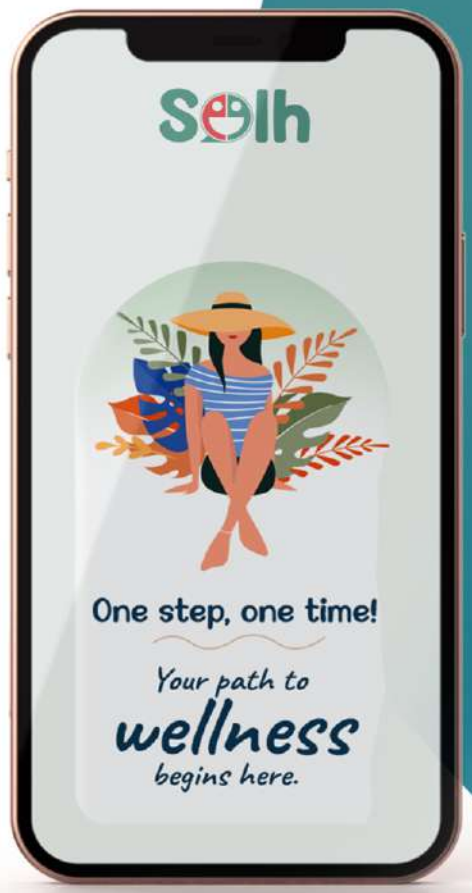

ONE-STOP MENTAL HEALTH SOLUTION

App features:

Listen and Share- Triggering thoughts or mini-notes, journal to share your journey as our active community is always 'all ears' to your perception. Our loving customers call it Insta for mental health.

Connect and Chat- Talk through your issues as we connect you to non-judgemental 'Solh' Partners who have been through similar experiences. Bridging the gap of lacking communication that leads to pent-up stress.

Marketplace- Building a community of cohesive listeners and professionals from an unrelated peer to the top medical/mental health professional, we have it all. We have made it as easy as being Zomato for food or Uber for cab rental.

Solh Talks- A specially designed show that puts the spotlight on lesser-heard & tabooed but critically important areas of mental health. We keep it real and relevant with top experts (practitioners or the ones who have been through it all).

Solh BREATHE-IN LET-OUT!

DOWNLOAD THE APP NOW!

India's 1st Mental Health Marketplace is here for all your mental health solutions

Available On App Store Google Play

www.solhapp.com | info@solhapp.com | @solhappofficial

Media COVERAGE

Soft Launch : Bringing India to Indians (and the World) : New series of Illustrated books by Shiv Kunal Verma at Pondicherry Literature Festival

One Heritage Media broke down the seminal ground as it produced three dazzling books that showcase parts of the Indian subcontinent. These books are part of a significant ground-breaking initiative to raise the bar and majorly impact the Indian educational system through another series of slightly smaller-sized illustrated books that are a part of the developing 'Value Education Program.'

The three large format books authored by the versatile filmmaker, photographer, and writer, Shiv Kunal Verma, brought to the fore decades of his dedicated work across various platforms. With layouts designed to enhance the quality by printing in six metallic colours, the three books — Beyond Kanchendzonga: India's Aerial Northeast (gold); Beyond the Rainshadow: Zanskar, Ladakh, and Nubra (copper); and Beyond Dakshinapatha: Tamil Nadu & Puducherry (copper) are the flagship publications that the BluOne group was positioning to generate funds for its leading Value Education Program that, according to Anirudh Chakravarthy, '...is being designed to enhance the quality of education by bringing to our children, across the cross-section of society, world-class material that hopefully would open up their horizons beyond the classrooms.'

These gold-standard books had their soft launch at the Pondicherry Literature Festival, held on August 5/6 and 7. Shiv Kunal Verma, who was expected to reach the city by evening, when contacted on the telephone in Kullu, where he resides, said he was delighted to have been returning to Puducherry, also featured in one of the three books. Having done his Undergraduate studies at the Madras Christian College, he recalled traveling to the city by clinging onto ropes on top of trucks in the early 1980s. 'Pondicherry was like a magnet,' he recalled, 'if we got an extended weekend, we would take off, and we just loved the place.'

Even the blurb, 'Bringing India to Indians', the driving emotive slogan behind this ambitious project, was the brainchild of Krishna Kumar Candeth, who was Shiv Kunal's teacher at the Doon School, while they were sat drinking a beer in the French Quarter four years ago. 'Things had a way of coming around again and again. I was delighted to have been heading for the PLF and thrilled to have the soft launch of the three pilot books here.' Incidentally, Mr Candeth's book, considered a classic, All Street Dogs Go to Heaven, was published by One Heritage Media's sister concern, BluOne Ink.

The smaller-sized Value Education series would provide an insight into not just diverse Indian terrain and the challenges and beauty of these regions. Some of the titles in the category include Eastern Palette, Uncharted Waters, Children of the Dawn, and Eternal Tamilakam, to name a few. These artistic works showcase the serenity, history, and magnificence of the various parts of India and its people. Four of the twelve books covered the entire wildlife of the subcontinent, the fourth volume of the quartet being devoted to the continental shelves and the island chains on both the eastern and western seaboards.

Speaking on the advent of the new book formats, Shiv Kunal Verma said, "These books would help facilitate the Value Education program and aspire to bring India to Indians. We believed our small and large format books would not be restricted to just the student body but would extend and permeate through their families. These books would help us deep root our cause of bringing India to Indians and eventually India to the rest of the world."

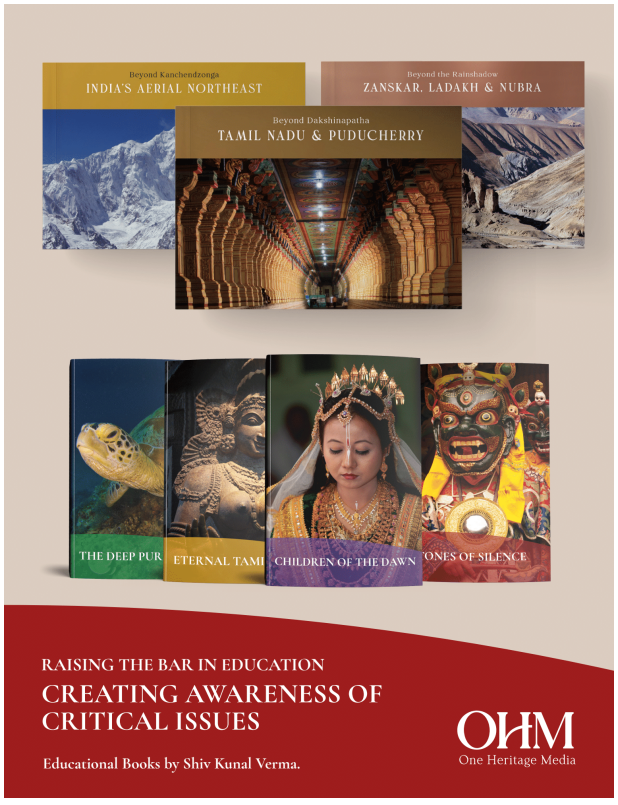

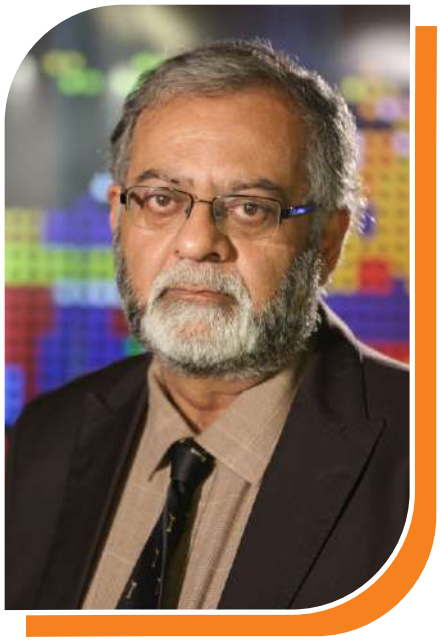

About the Author

Shiv Kunal Verma

is an author who has closely experienced war situations and life in the remotest parts of the country. Several books, including Ocean to Sky: India from the Air, The Long Road to Siachen, The Northeast Trilogy, The Assam Rifles, 1962: The War That Wasn't, and 1965: A Western Sunrise, are a compilation of his thoughts and work. One of his many interests is to develop a Value Education Program that entails books on diverse subjects, including wildlife, military, history, and anthropology.

Kunal graduated from The Doon School, Dehradun, and Madras Christian College. In the mid-1980s, he worked as a journalist with India Today and the Associated Press. From 1980- the 90s, under the banner of KaleidoIndia, he shot and directed numerous films mainly for the Armed Forces, including filming the Kargil War as a cameraman. For the last six years, he has been at the helm of the seminal Military History Seminar conducted by the Welham Boys' School, Dehradun. Shiv has made his name in the world of art writing and illustrative depiction of emotions and history with such a strong legacy and background in history and art. The readers enjoy his works at the various literature festivals, including the PLF.

Book Launch: "Seven Immortals" Immortality : Boon or Curse by Shalini Modi, organised by Oxford Bookstores

On 5 August 2022, in association with Invincible Publishers, Oxford Bookstores presented the "Seven Immortals" launch by Shalini Modi at The Park, New Delhi. The book launch was followed by an interesting panel discussion between the Author of the book, Shalini Modi, and the eminent Artist, Raghu Vyas, who has extensively painted characters from our epics, and the renowned Photographer Samar Singh Jodha. Well-known Art Critic and Editor Monica Arora moderated the session.

The discussion centered on the theme "How relevant is immortality in the 21st century?" which highlighted the growing interest in Indian mythology in India and worldwide. The author narrated the lives of the seven immortals in Hindu mythology from the Puranas, Ramayana, and Mahabharata and spoke about their immortality, the positives and the negatives that come with it, the uniqueness of each character, and most importantly, the life lesson that people could learn from each of them.

At the book launch session, eminent Artist Raghu Vyas said, "Seven Immortals by Shalini Modi reflects in-depth research on Hindu mythological epics like Ramayana and Mahabharata. Shalini splendidly portrays the literary accounts of how the great figures of the epics exist even today, in the form of their divine patronage of art and culture. Numerous painters in India, including Raja Ravi Varma and myself, have painted artworks centrally themed around these epics' narratives. This in itself is very indicative of how art forms are immortal."

About the Author

Shalini Modi

is an author interested in old Indian scriptures, Vedas, Upanishads, Puranas, and Epics, as she feels they have a lot to offer. She believes that those stories and philosophies are relevant to our lives even today, and a parallel can be drawn to any situation in our lives. She is an astrologer and runs an NGO called Pragati Kendra, which supports underprivileged children in their education and encourages women to become economically independent. Her engaging style, unconventional approach, and effort to find symbolism in our old texts make the read interesting.

Book Launch: 'Pioneers of Modern India' - Eight-title monograph series, organised by Niyogi Books

Niyogi Books takes pride in announcing its first-ever endeavour in releasing a series of monographs on Stalwarts who trod the world of Science, Art, Culture, Spirituality, and Politics and, in their own way, were instrumental in their contributions to society at large, in shaping Modern India.

The titles were launched in the presence of authors VR Devika, Anuradha Ghosh, Amiya P Sen, Ashoke Mukhopadhyay, EP Unny, HS Shivaprakash, Usham Rojio, Som Kamei, and the Editorial Director of Niyogi Books Nirmal Kanti Bhattacharjee, who also coordinated the event.

Professor Nirmal Kanti Bhattacharjee opened the proceedings by thanking all present. He said that these monographs were conceptualised to be inspiring reads for the young generations of readers. He also stated that the goal with these books was to make them highly well-researched yet accessible to the average readers.

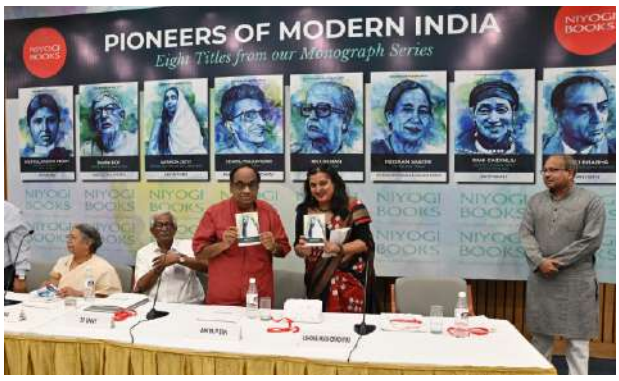

Muthulakshmi Reddy : A Trailblazer in Surgery and Women's Rights by VR Devika.

This is the story of a pioneer path-creator for women. She was the first girl student in Maharaja's School for Boys in Pudukkottai, the first Indian woman surgeon from Madras Medical College, the first Indian member of the Women's Indian Association, the first woman member of the legislature of Madras Presidency, the first woman Deputy Speaker and the first Alderwoman. In this book, the author describes the indomitable spirit of a woman who campaigned to get rid of the practice of wet nurses, fought for girls' education, widow remarriage, equal property rights for women, education reforms, and rural healthcare for women. She took up the case of getting the practice of dedicating young girls as Devadasis abolished. This monograph describes how Dr Reddy established Avvai Home for poor and needy girls, from where thousands have graduated and found their feet.

Sarada Devi : Holiness, Charisma and Iconic Motherhood by Amiya P Sen

This book monograph presents how Sarada Devi while remaining well within the confines of patriarchal society and despite severe economic and physical hardships, played the roles of the caregiver in her family and a spiritual guide for her followers with equal perseverance.

This book is about understanding religious charisma associated with an unschooled but dynamic woman who had immense courage, common sense, and conviction, deftly combining the roles of a social counsellor, a spiritual preceptor, and a popular cultic leader. Sarada Devi has been the inspiration behind the Sarada Math and Mission that uniquely combines the world of feminine spirituality and active social work for Indian women. This work is a study of the social and historical processes that made this possible.

Charu Majumdar : The Dreamer Rebel by Ashoke Mukhopadhyay

The third book in this series is the first-ever monograph on Charu Majumdar in English. A concise biography that traces the life of Charu Majumdar as he incited a burning fire of revolution into his young mind that reshaped the political journey of Modern India. It also unearths the birth of Naxalism in Bengal and traces its journey through different parts of India. A well-researched book on the legendary rebel of the 1970s, who, besides calling for an armed revolution, taught many to dream.

RK Laxman : Back with a Punch by EP Unny

The fourth book is again a concise monograph on the life of RK Laxman as he caricatured the personalities and events that made Modern India. It analyses the influences that led Laxman to become a much-loved cartoonist, such as the impact of the city of Mumbai on his life and work, and also explores the reasons for the enduring popularity of Laxman's work, including his most famous creation—the Common Man.

In Unny's succinct style, this monograph provides a concise account of Laxman's journey as his pen captured Modern Indian History for readers worldwide.

Jamini Roy : A Painter Who Revisited the Roots by Anuradha Ghosh

A concise biography that traces the life of Jamini Roy, the person, and the journey of Jamini Roy, the artist. Tracing the rural, anonymous sources of Bengal folk art and its journey towards a global platform through Jamini Roy also shows how the rural folk moulded Roy's artistic outlook.

The humble man who began his early meditation in the narrow, serpentine lanes of the North Calcutta neighbourhood became a silent revolutionary. Inspired by the folk traditions of Bengal, he created a unique artistic vision. Such was the euphoric trajectory of Jamini Roy, the first native genius to have connected rural art to the global.

Told in a simple and engaging mode, the book explores the multiple facets of a man for whom art was both a livelihood and a meditative journey and followed his life of disciplined simplicity along with his quirks and idiosyncrasies.

Rani Gaidinliu : Legendary Freedom Fighter from the North East by Som Kamei

Rani Gaidinliu was a well-known freedom fighter, remembered fondly by the people and given recognition and honour by the Government of India. Her struggles and legendary exploits against the mighty British Empire in North East India are well documented. Her contribution to the freedom struggle is being taught as part of the History syllabus in schools and colleges in India.

This monograph is an insightful analysis of Rani's growth and journey as a Naga spiritual leader who fought to preserve her indigenous tribal way of life by reforming the ancient Zeliangrong religion.

Heisman Sabitri : The Way of the Thamoi by H S Shivaprakash and Usham Rojio

The book offers a genuine insight into the world of Manipuri theatre, particularly that of Heisnam Sabitri and Heisnam Kanhailal, the founders of Kalakshetra Manipur. An invaluable addition to theatre and performance studies, it delineates the first-hand perspective of Heisnam Sabitri and her husband, Heisnam Kanhailal—two great legendary innovators of 20th-century Indian theatre. It views the different aspects of theatre in the light of 'thamoi'—a Meitei-specific concept.

Homi J Bhabha : A Renaissance Man among Scientists by Biman Nath

The only monograph that sheds light on H J Bhabha's rich scientific legacy and vision for India shows Bhabha's foresight in setting up high-quality research facilities for nuclear energy in our country, such as TIFR and BARC, and brings to light Bhabha's passionate interest in art, architecture, drawing, painting, and classical music, which made him a true renaissance man!

Comprehensive and reflective, this monograph encapsulates Bhabha's vision for India and sheds light on his rich legacy. His legendary leadership in organizing scientific research in India and his drive and passion continue to inspire generations of students in India.

Book Release : 'The Guru - Guru Nanak's Saakhis', by Author Rajni Sekhri Sibal, organised by Story Mirror

Nobel Peace Laureate Kailash Satyarthi, in his empathic message on the unveiling of the book, The Guru: Guru Nanak's Saakhis, said, "Compassion is the central theme of Guru Nanak Dev's teachings. His world view is rational, liberal, and humane." "He was a firm advocate of equality and was of the view that: he who regards all as equals is truly religious," said Kailash Satyarthi. Retired civil servant Rajni Sekhri Sibal authors the new book.

Kailash Satyarthi could not join in on the book's unveiling owing to the rising Covid cases in New Delhi. But in his sagacious message, he underlines the deep, spiritual, and wonderful thoughts of Guru Nanak Dev expressed in the book.

Kailash Satyarthi further said in his message that short stories about Guru Nanak Dev provide an insight into the life and teachings of a wise, rational, and compassionate spiritual leader who walked this earth five centuries ago. The truth in Nobel Laureate's profound message on Guru Nanak is relevant today as Kailash Satyarthi believes Guru Nanak's teachings were radical and highly relevant in the stratified society of his times. Kailash Satyarthi describes the present day as "A World at War with Itself.

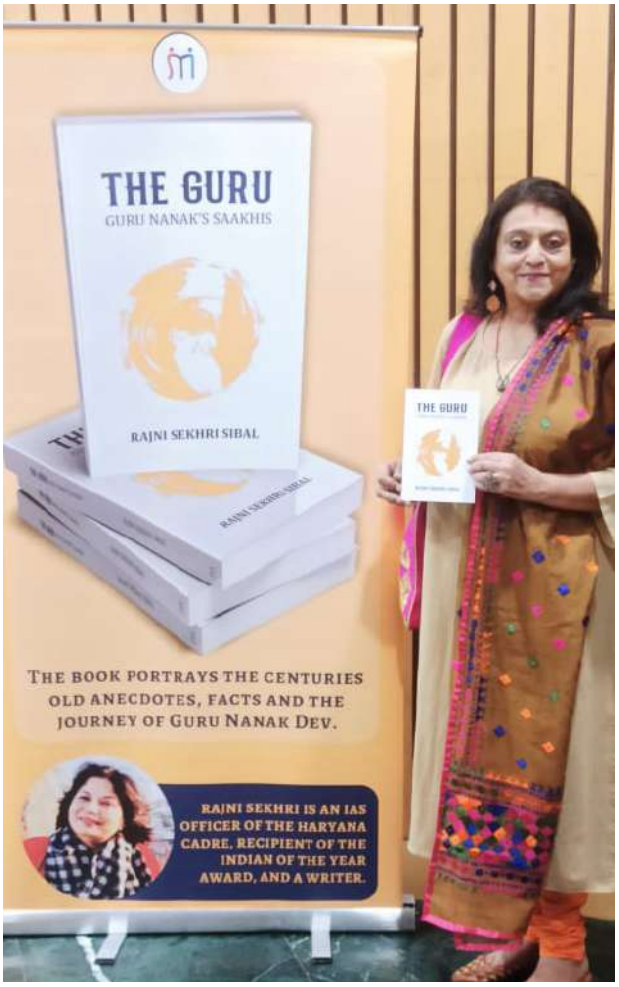

According to Kailash Satyarthi, the stories expressing Guru Nanak Dev's teachings are fascinating and inspirational and store a wealth of knowledge that is conveyed to the reader subtly and appealingly.

The Nobel Laureate finds the anecdotes to be deeply engaging and poetic in capturing the essence of the time during Guru Nanak Dev.

According to the author, the stories that she heard in her childhood from her grandmother were inspiring and compelled her to write them in simplified language to widen the outreach of the spiritual wisdom and teachings of Guru Nanak. "I have been a huge admirer of his (Guru Nanak Dev) wisdom and teachings and always tried to walk on his path," said the author.

The book was unveiled on August 6 at India International Centre in the presence of Justice S S Saron, ex-Punjab and Haryana High Court, and Chairman Gurudwara Election Commission, Gurjit Singh, former Ambassador to Germany, and Manjeev Puri, former Ambassador to European Union.

The book has been published by Mumbai-based StoryMirror, India's largest literature platform connecting readers and writers with 11 million readers, 800,000+ stories and poems, and 100,000+ writers who have written 650 million+ words in 10 languages. StoryMirror has emerged as the most reliable, innovative, and flexible publishing platform for writers looking to publish their books and reach millions of readers. So far, StoryMirror has published 700+ physical books and 3000+ ebooks across various genres and languages, out of which 26+ books have been bestsellers.

PubliCon 2022 and Publishing Awards, organised by the Federation of Indian Chambers of Commerce & Industry (FICCI)

This edition of "PubliCon" was organized by FICCI on August 5, 2022, in New Delhi. The programme witnessed a congregation of publishers, printers, distributors, content creators, librarians, authors, storytellers, digital marketers, IP attorneys, and other stakeholders in the publishing sector.

During the programme, FICCI Publishing Awards were conferred. The FICCI Publishing Awards were instituted in 2017 to reward the talent, initiative, entrepreneurial zeal, and untiring efforts of publishers and authors. This year FICCI Publishing Awards has recognised and facilitated the best books in Business, Translation, Designing, Children's literature, etc.

Frontlist Media was one of the Media Partners at this event.

On 5th August 2022, Mr Temjen Imna Along, Minister of Higher Education and Tribal Affairs, Govt of Nagaland, said that the publishing industry plays an important role in moving India into a successful nation. "There is a need to create more awareness on the importance of reading books. As the nation moves towards the 21st century, we need to assimilate all of these so that the citizens can derive the benefit of books and the narratives set to be at the forefront of nation building," he added.

Addressing the 'FICCI PubliCon 2022 and Publishing Awards', Mr Along emphasized that publishing houses have a significant role in India's growth journey. "The New Education Policy (NEP) also highlights the importance of writers and publishing houses. Today, people prefer a digital reading format to a physical book," he stated.

Emphasizing the need to set up a library in every district and village of India, Mr Along said, "It is equally important to raise the awareness level towards reading books apart from setting up the library. In today's time, digitalization is playing a crucial role, and we need to create a balance between digitalization and physical books," he added.

He also stressed the need for developing more content by writers and publishing houses, especially for the students, apart from focusing on other books.

Prof. Govind Prasad Sharma, Chairman, NBT India, Ministry of Education, Govt of India, said that books play an important role in taking any nation and humanity forward. "The invention of printing started the book culture and a culture of reading. Books are the source of enhancing the scope of knowledge to a large extent. We need to increase the awareness of book culture. Books are called as a friend, philosopher, and guide for anyone," he added.

Prof Sharma further stated that there is a need to ensure that we can write books in different languages. "Translation is one area which needs to be given more importance in today's time—the New Education Policy also emphasizes the role of translation. By translating into different languages, the message can be spread to a larger audience in society. We must focus on increasing our efforts in this direction," he emphasized.

Mr Yuvraj Malik, Director, NBT India, Ministry of Education, Govt of India, said that publishers should position themselves as the knowledge partners of the society.

Mr Neeraj Jain, Chair, FICCI Publishing Committee, and MD, Scholastic India, said that there is immense scope for the printing and publishing industry if the issues related to paper availability as raw material and prices are resolved. "This will also ensure global printing business come to India," he added. He also asserted starting a library in every village or district of India. Mr Jain also appealed to launching a new campaign, 'Let's Read,' to encourage more book reading in line with FICCI's campaign on 'Roz Ek Nai Kahani.'

Mr Ananth Padmanabhan, Co-Chair, FICCI Publishing Committee and CEO, HarperCollins India, said that a book is not just a printed book but a feeling associated with it. All our publishers must think beyond print and diversify in digital. "There is a clear need to diversify in what we do to publish in various formats across languages and ensure that we take advantage of technology to introduce more books in the market," he added.

Ms Monica Malhotra Kandhari, Co-Chair, FICCI Publishing Committee and MD, MBD Group, delivered the vote of thanks.

FICCI Publishing Awards were announced during the event

Awards List

Publisher	Book	Category	Award
Pickle Yolk Books	'Aai and I'	Children Book of the Year English (Below 10 years)	
Kalpavriksh	'Miracle on Sunderbaag Street'	Children Book of the Year English (Below 10)	Special Jury Award
Harper Collins Pvt Ltd	'Kaya's Journey: The Story of a 100-year-old Koi Fish'	Children Book of the Year English (Below 10)	Special Jury Award
Pratham Books	'Home'	Children Book of the Year English (10 & Above)	Special Jury Award
Harper Collins Pvt Ltd	'The Secret Life of Debbie G'	Children Book of the Year English (10 & Above)	Special Jury Award
Publications Division, Ministry of I&B, Govt of India	'Swachhta Shree Samman'	Children Book of the Year Hindi (Below 10)	
Publications Division, Ministry of I&B, Govt of India	'Rangili, Bullet aur Veer'	Children Book of the Year Hindi (10 & Above)	
Hachette India	'The Black Dwarves of the Good Little Ray	Book of the Year - Fiction (English)	
Harper Collins Pvt Ltd	'The Last Queen'	Book of the Year - Fiction (English)	Special Jury Award
Harper Collins Pvt Ltd	'Girl in White Cotton (Burnt Sugar)'	Book of the Year - Fiction (English)	Special Jury Award
Harper Collins Pvt Ltd	'Dopehri'	Book of the Year - Fiction (Hindi)	
Harper Collins Pvt Ltd	'The Death Script'	Book of the Year Non-Fiction (English)	
Profile Books (Hachette India)	'Mountain Tales: Love and Loss in the Municipality of Castaway Belongings'	Book of the Year Non-Fiction (English)	Special Jury Award
Palm Leaf Innovation	'Hanuman Chalisa'	Book of the Year Non-Fiction (Hindi)	

Publisher	Book	Category	Award
Harper Collins Pvt Ltd	'Loss'	Book of the Year - Best Overall Design	
Roli Books Pvt Ltd	'India: A Story through 100 objects'	Book of the Year - Best Overall Design	Special Jury Award
Pratham Books	'Asamo, is that you?'	Book of the Year - Best Overall Design	Special Jury Award
Om Book International	'Great Wild Cats/ Born to be Free'	Book of the Year - Best Production	
Om Book International	'Indian Botanical Art: An illustrated History'	Book of the Year - Best Overall Design	Special Jury Award
Hachette India	'The Man Who Learnt to Fly but Could Not Land'	Book of the Year - Best Translation	
Harper Collins Pvt Ltd	'Legal Fiction'	Book of the Year - Best Translation	Special Jury Award
Harper Collins Pvt Ltd	'Moustache'	Book of the Year - Best Translation	Special Jury Award
Bloomsbury Publishing India	'Demystifying Leadership: Unveiling The Mahabharata Code'	Business Book of the Year - Business Management	
Roli Books	'Pandemonium: The Great Indian Banking Tragedy'	Business Book of the Year - Business Economics	
Bloomsbury Publishing India	'The Indic Quotient: Reclaiming Heritage Through Cultural Enterprise'	Business Book of the Year - Self Help	
Harper Collins Pvt Ltd	'Being Gandhi'	Children Book of the Year English (10 & Above)	
Publications Division, Ministry of I&B, Govt of India	'Navikarniya Urja Sansadhan'	Book of the Year Non-Fiction (Hindi)	Special Jury Award
Hachette India	‘These, Our Bodies, Possessed by Light’	Book of the Year- Best Cover Design	
Harper Collins Pvt Ltd	‘Tiananmen Square: The Making of a Protest’	Book of the Year- Best Cover Design	Special Jury Award

पुस्तक लोकार्पणः 'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' और 'तेरह हलफ़नामे' द्वारा अलका सरावगी, वाणी प्रकाशन

- **तेरह हलफ़नामे**–आज़ादी के अमृत महोत्सव पर 11 भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनूदित कहानियों का लोकार्पण। साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित लेखिका अलका सरावगी द्वारा अनुवाद व संकलन।
- **'तेरह हलफ़नामे'** में महाश्वेता देवी (बांग्ला), इस्मत चुग़ताई (उर्दू), कमला दास (मलयालम), मामोनी रायसम गोस्वामी ;(असमिया), कुर्रतुलएन हैदर (उर्दू), वैदेही (कन्नड़), कृष्णा सोबती (हिन्दी), अंजलि खाँडवाला (गुजराती), विश्वप्रिया एल. आयंगर (तमिल), टी. जानकी रानी (तेलुगु), उर्मिला पवार (मराठी), अनिता देसाई (अंग्रेज़ी) और चित्रा मुद्गल (हिन्दी) की कहानियों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित।
- कार्यक्रम में अलका सरावगी के बेस्टसेलर उपन्यास 'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' के दूसरे संस्करण का लोकार्पण।

वाणी प्रकाशन ग्रुप से प्रकाशित साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित लेखिका अलका सरावगी की दो पुस्तकों–'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' और 'तेरह हलफ़नामे' (अनुवाद, सहयोगः गरुत्मान) पर परिचर्चा समारोह का आयोजन 29 जुलाई 2022 को शाम 4:30 बजे 'साहित्य अकादेमी' रवीन्द्र भवन, 35 फ़िरोज़शाह, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

उत्तर–उपनिवेशवाद और अनुवाद अध्ययन के विद्वान हरीश त्रिवेदी ने लेखिका की प्रशंसा करते हुए कहा "अलका सरावगी हर बार खुद को एक अच्छी कथावाचक साबित करती हैं।"

इस अवसर पर युवा आलोचक वैभव सिंह ने कहा–"कुलभूषण की कथा सिर्फ़ कुलभूषण की कथा नहीं है यह पूर्वी बंगाल के पीड़ितों की कथा है, ये एक ऐसे समय का उपन्यास है जिसमें धर्म और भगवान तक ने हमारा साथ छोड़ दिया है।"

कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य वक्ता कहानीकार, कथा–आलोचक और कवि रोहिणी अग्रवाल ने कहा–"पुस्तकों में पात्र बहुत मिलते हैं लेकिन पात्र के भीतर मनुष्य को खोजना और मनुष्य के भीतर भविष्य गढ़ने वाले नायक को स्थापित करने की दृष्टि अलका के पास है इसलिए 'कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए' अपने समय का मील का मील का पत्थर है।"

दोनों पुस्तकों की लेखिका अलका सरावगी ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा–"मेरी कथाओं के जो पात्र है वो असल जीवन से लिए गये

पात्र है, ये कोई मनगढ़ंत या बनाये हुए पात्र नहीं हैं। कुलभूषण के बारे में मैं जब सोचती हूँ लगता है कि हम सभी के जीवन में उस भूलने वाले बटन की आवश्यकता है। यह उपन्यास लिंगीय राजनीति से कोसों दूर है। विभाजन की पीड़ा और मनुष्य की मनुष्यता बचाने की जद्दोजहद को क़रीब से समझता है।"

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ कथाकार ममता कालिया ने कह–"कुलभूषण जैसा पात्र आपको हर घर में मिलेगा और तेरह हलफ़नामे की कुछ कहानियाँ अपने समय से आगे की कहानियाँ हैं।"

वाणी प्रकाशन ग्रुप के चेयरमैन व प्रबन्ध निदेशक अरुण माहेश्वरी भी इस समारोह में उपस्थित थे। उनका भी यही मानना था कि पुस्तक में इतिहास प्रेम और मानवीयता के साथ–साथ सबसे बड़ा जो गुण पाठ की निरन्तर पठनीयता है जिससे कि यह पुस्तक सुधी पाठकों के मध्य लोकप्रिय और प्रशंसित हुई। ऐसी ही पुस्तकें कालजयी कृतियों के रूप में जानी जाती हैं।

वाणी प्रकाशन ग्रुप की कार्यकारी निदेशक, अदिति माहेश्वरी गोयल ने सुव्यवस्थित और सुचारु रूप से कार्यक्रम का संचालन किया।

आज़ादी के 75वें वर्ष में श्री अरुण माहेश्वरी को प्रकाशन उद्योग में योगदान हेतु 'कैरेक्टर–ट्री' सम्मान

आज़ादी के 75वें वर्ष में श्री अरुण माहेश्वरी को प्रकाशन उद्योग में योगदान हेतु 'कैरेक्टर–ट्रीश् सम्मान।

वाराणसी, उत्तर प्रदेश की आध्यात्मिक संस्था 'अक्' द्वारा आयोजित भारत की आज़ादी के 75वें वर्ष को समर्पित कार्यक्रम 'भारतामृत' में फ़िल्म अभिनेता पंकज त्रिपाठी, स्वामी ओमा अक् और पद्मश्री डॉ. राजेश्वर आचार्य के कर–कमलों द्वारा वाणी प्रकाशन ग्रुप के चेयरमैन व प्रबन्ध निदेशक श्री अरुण माहेश्वरी को 'कैरेक्टर–ट्री' सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान प्रकाशन उद्योग में योगदान के लिए दिया गया है।

सम्मान ग्रहण करते हुए श्री अरुण माहेश्वरी ने कहा, "हमारा पुस्तक व्यवसाय प्रेम और संवेदना से लबरेज़ है और हम तल्लीनता से अपनी भाषा और साहित्य के प्रचार–प्रसार में शामिल हैं। पुस्तक प्रकाशक के लिए ये युवा शायर–सतेन्द्र 'मनम' की पंक्तियाँ मौजूँ हैं–

"दुकान किताब की महज़ इक दुकान नहीं
जमा है इसमें समन्दर उफनते ख़यालों का
किताबें बेचने वाली दुकानें ख़ास होती हैं
यहाँ जज़्बात मिलते हैं ख़यालात मिलते हैं
यहाँ आदमी को इंसां बनाने के
सारे सामानात मिलते हैं....."

अरुण माहेश्वरी का जन्म 10 दिसम्बर, 1960, हापुड़ (उ.प्र.) में हुआ। उनकी शिक्षा बी.ए. (हिन्दी ऑनर्स), एम.ए. हिन्दी (भाषा विज्ञान), (दिल्ली विश्वविद्यालय से) हुई। चेयरमैन, वाणी फाउंडेशन, संस्थापक : वाणी फाउंडेशन डिस्टिंग्विश्ड ट्रांसलेटर अवार्ड।

सदस्य (भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों के चयनित प्रतिनिधि), केन्द्रीय साहित्य अकादेमी, वर्ष 2011 व 2017 के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा सलाहकार समिति में नामित, नागपुर विश्वविद्यालय 'बोर्ड ऑफ़ स्टडीज' में चयनित सदस्य, सदस्य, प्रबन्धक मण्डल, इन्दिरा गाँधी शारीरिक शिक्षा एवं खेल विज्ञान संस्थान, नयी दिल्ली, सदस्य, सलाहकार समिति (हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय), दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली।

अरुण माहेश्वरी जी को वर्ष 2017 में पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा प्रकाशन के लिए 'स्वर्ण कमल सम्मान' से सम्मानित, द फेडरेशन ऑफ़ इंडियन पब्लिशर्स द्वारा वर्ष 2008 में भारत के सर्वश्रेष्ठ प्रकाशक के रूप में 'डिस्टिंग्विश्ड पब्लिशर अवार्ड' से सम्मानित, पोलैंड सरकार द्वारा हिन्दी व पोलिश भाषा के सांस्कृतिक सम्बन्धों के विकास के लिए पदक व प्रशस्ति पत्र, मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा सम्मानित, रूसी सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा सन् 2000 में सम्मानित, 'नेशनल लाइब्रेरी, स्वीडन' द्वारा सम्मानित, 2017 में ऑक्सफोर्ड बिज़नेस कॉलेज ऑक्सफोर्ड, यूनाइटेड किंगडम द्वारा 'एक्सेलेंस अवार्ड' से सम्मानित और मार्जान सतरापी द्वारा लिखित हिन्दी में अनूदित फ्रेंच ग्राफ़िक नॉवेल 'पर्सेपोलिस' को पब्लिशिंग नेक्स्ट अवॉर्ड–2022 का बेस्ट प्रिंटेड बुक ऑफ़ द ईयर से सम्मानित किया जा चुका है।

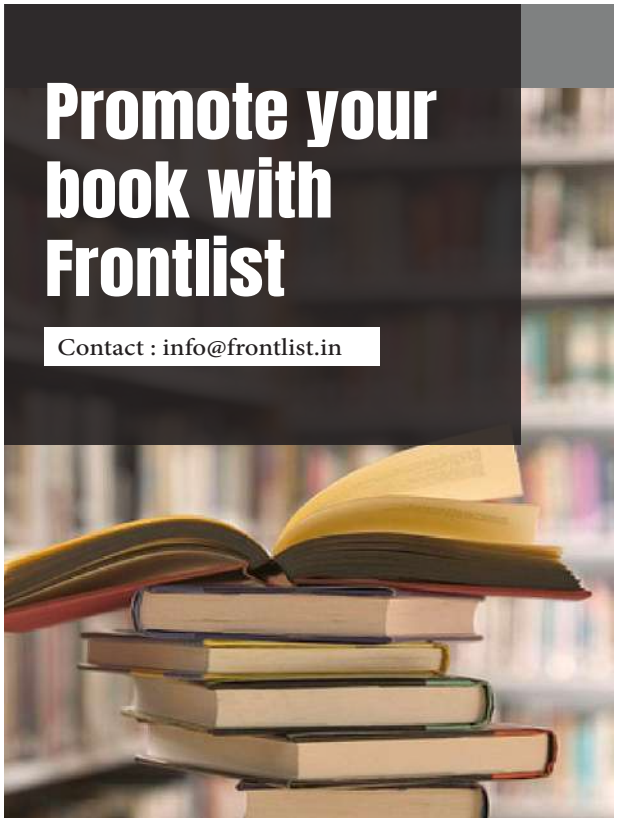

Book Launch: "MY SILK ROAD: The Adventures and Struggles of a British Asian Refugee" by Ram Gidoomal, organised by CottonConnect

My Silk Road: The Adventures and Struggles of a British Asian Refugee by Ram Gidoomal was launched in Delhi on 26 August 2022 by entrepreneur and socialite Ramola Bachchan in a ceremony at India Habitat Centre. This memoir was published by Pippa Rann Books and Media, UK, and is distributed in India by Penguin Random House India. The event was attended by retired Ambassador K P Fabian and Madhav Bellamkonda, CEO of World Vision India.

Upon introducing Ram Gidoomal, Geetanjali Solanki, Country Manager, CottonConnect, said, “Ram Gidoomal was born into an Indian immigrant family of silk traders in Kenya and enjoyed his childhood in Mombasa. When he turned 17, his family endured devastating second deportation to London. Starting from scratch, Ram built a successful career in business and was firmly on the road to success, prosperity, and fortune. A life-changing journey led him to dedicate his business skills instead of profit to those who need them the most. Her Majesty, The Queen, recognized his contributions to the community. In 1998, he was appointed as the Commander of the Order of the British Empire (CBE), the highest ranking order of the British Empire, excluding Knighthood.”

Speaking about Ramola Bachchan, Geetanjali Solanki said, “Ramola Bachchan decided in 2005 to relocate from the UK to India after two decades. Life in London meant taking care of a growing family, heading a PR firm, and being active in the social and fundraising scene. This was an unexpected move after the children had flown the nest. Describing herself as something of a serial entrepreneur, on her return, Ramola found that new opportunities kept presenting themselves. Her first venture was to open Manré - the award-winning fine dining modern European restaurant in Delhi. She promoted fashion through fashion & lifestyle exhibitions and interiors, Runway Rising and Runway Bride, started her fashion range First Resort, and a food brand called The Accidental Chef.” She says that what makes Ramola happiest is interacting with people and being part of their life's journey wherever possible.

The event was moderated by Kinner Lakhani, Global Commercial Director, CottonConnect. Upon releasing the memoir, Ramola Bachchan said, “Ram and I have known each other for 20-25 years, and I have had the pleasure of watching Ram grow professionally and achieve all sorts of amazing achievements that one couldn't have imagined. I also have the good fortune to know him personally and find him one of the kindest and most caring human beings. So it's been a pleasure for me to be associated with him all these years and watch him grow from strength to strength, and I am delighted to endorse and launch his memoir. I wish him all the very best and hope his readers will appreciate all his hard work over the years.”

Along with sharing some memorable childhood moments, Ram Gidoomal, author of 'My Silk Road' read excerpts from the book. He explained how a wonderful gesture by his children, creating a video of family, friends, and his professional contacts wishing him on his 70th birthday during a COVID lockdown went on to conceptualizing this memoir. The name 'The Silk Road' was taken from his family's silk trading business. He elucidated that his grandfather, with two younger brothers, had set up a business between Japan, East Africa, and South Africa of silk sarees, and they were hugely successful. Though due to India's partition, all of their wealth was lost. It's this silk trade that inspired him to name this book. He believes that every one of us can have our silk road, which is the central message of this book.

The launch ended with a networking session over food and drinks.

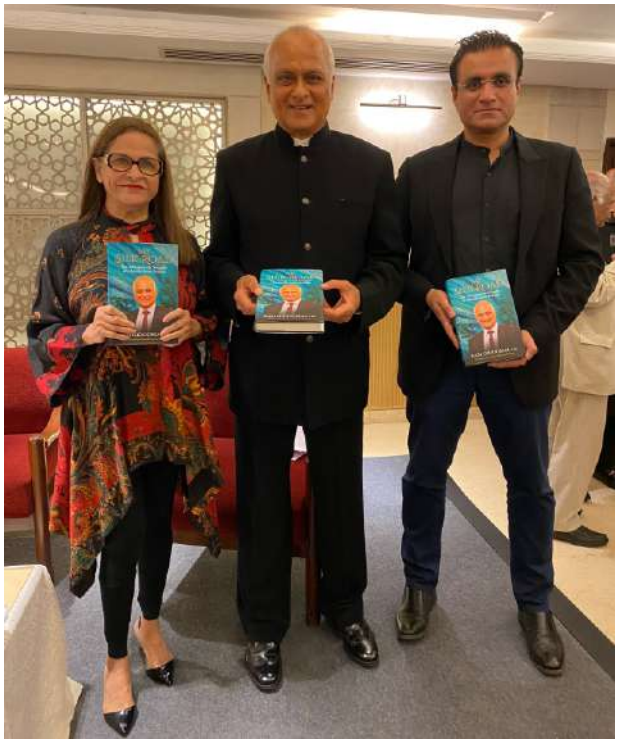

प्रगति विचार

'हिंदी में'

14 सितंबर 2022

PragatiE Vichaar Hindi Diwas 2022

A 1-day event specifically designed to celebrate and spread the joy and love of Hindi language

The event will be held on 14 September during the most significant book fair of the year- ***Virtual Delhi Book Fair*** (DBF), from 13 September- 17 September 2022.

Get ready to attend the virtual event on 14th September!

Catch live on pragati Platform

AUTHOR INTERVIEWS

Rajesh Talwar *Author of "How to Kill Everyone on the Planet"*

Rajesh Talwar has written twenty-nine books, which include novels, children's books, plays, self-help books, and non-fiction books covering issues in Social Justice, Culture, and Law. His novels include Simran - on aesthetics, and Inglistan - on cultural contrasts. An Afghan Winter and The Sentimental Terrorist explore the theme of terrorism. How to Kill a Billionaire reveals the workings of the Indian justice system. From the Lips of the Goddess – Mata Vaishno Devi is on the sacred feminine.Rajesh's plays cover diverse contemporary themes and historical retellings. They include Inside Gayland, The Bride Who Would Not Burn, Conquest at Noon, The Killings in November, Kaash Kashmir, Aurangzeb: The Darkness in His Heart, Gandhi, Ambedkar and the Four-Legged Scorpion, High Fidelity Transmission, and A Nuclear Matricide.His non-fiction works include The Judiciary on Trial, Courting Injustice: The Nirbhaya Case and Its Aftermath, The Third Sex and Human Rights, The Vanishing of Subhash Bose, and The Killing of Aarushi and the Murder of Justice. Self-help books include How to Choose Your Lawyer and Win Your Case, Making Your Own Will, The Divorce Handbook, and Indian Laws of E-business.His books for children include The Three Greens, The Bearded Prince, The Sleepless Beauty, Fabulous Four Battle Zoozoo, the Wizard, and Playwrights - A One-Act Play for Children on Human Rights.He has contributed to The Economic Times, The Guardian, The Pioneer, The Times of India NIE, Manushi, The Sunday Mail, and the New Indian Express. He is a sought-after speaker at Literary Festivals.Rajesh works as Deputy Legal Advisor to the United Nations Mission in Afghanistan.

Frontlist : "How to Kill Everyone on the Planet" is science fiction. Could you please explain the term "Nuclear Matricide" mentioned in your novel?

Rajesh : Yes, aside from the main title to the play, that is to say, 'How to Kill Everyone on the Planet,' a subtitle was also needed to explain how this task – of killing everyone on the planet – would be accomplished. Now that Corona has been around for a while, we are all only too aware that, apart from multiple and large nuclear explosions, there exist other ways of exterminating the human race. After some reflection, I settled upon the somewhat lengthy subtitle: 'Ukraine and Other Recipes for a Nuclear Matricide.'Now to your question: why 'Nuclear Matricide'? I could have used 'Nuclear Holocaust' as the more usual term. Still, despite the terrifying visuals the term initially conjured up, over the years, the impact of that expression has become diluted, and it even sounds clichéd. It does not bring forward a visual of the almost unimaginable horror of something like Hiroshima and Nagasaki. Besides, the holocaust is a homocentric term that tends to focus more on 'human' suffering alone.It is our mother, Mother Earth, whom we are killing. Over the years, we have been slowly destroying her by poisoning her skies, forests, and oceans. As an Indian, growing up in a culture that practices worship of the sacred feminine, there is nothing as horrific as killing your mother, the one who gave birth to you and nurtured and cared for you. It's sacrilegious even to think or imagine how this could ever happen, but as the situation stands in the world today, it is a possibility that is very much on the cards.In general, across the world, matricide, as a crime, seems to be a much more terrible crime than its gender equivalent, patricide or fratricide. Patricide and fratricide are commonplace; there were ambitious princes in many cultures and kingdoms who thought killing a brother or even a father was par for gaining access to the throne. Killing your mother – that is something else entirely.

Frontlist : "How to Kill Everyone on the Planet" is science fiction. Could you please explain the term "Nuclear Matricide" mentioned in your novel?

Rajesh : Yes, aside from the main title to the play, that is to say, 'How to Kill Everyone on the Planet,' a subtitle was also needed to explain how this task – of killing everyone on the planet – would be accomplished. Now that Corona has been around for a while, we are all only too aware that, apart from multiple and large nuclear explosions, there exist other ways of exterminating the human race. After some reflection, I settled upon the somewhat lengthy subtitle: 'Ukraine and Other Recipes for a Nuclear Matricide.'Now to your question: why 'Nuclear Matricide'? I could have used 'Nuclear Holocaust' as the more usual term. Still, despite the terrifying visuals the term initially conjured up, over the years, the impact of that expression has become diluted, and it even sounds clichéd. It does not bring forward a visual of the almost unimaginable horror of something like Hiroshima and Nagasaki. Besides, the holocaust is a homocentric term that tends to focus more on 'human' suffering alone.It is our mother, Mother Earth, whom we are killing. Over the years, we have been slowly destroying her by poisoning her skies, forests, and oceans. As an Indian, growing up in a culture that practices worship of the sacred feminine, there is nothing as horrific as killing your mother, the one who gave birth to you and nurtured and cared for you. It's sacrilegious even to think or imagine how this could ever happen, but as the situation stands in the world today, it is a possibility that is very much on the cards.In general, across the world, matricide, as a crime, seems to be a much more terrible crime than its gender equivalent, patricide or fratricide. Patricide and fratricide are commonplace; there were ambitious princes in many cultures and kingdoms who thought killing a brother or even a father was par for gaining access to the throne. Killing your mother – that is something else entirely.

Frontlist : Could you share some intriguing facts you learned while researching for this book?

Rajesh : The book involved a fair amount of research. While writing it, I wondered if other species on the planet were as suicidally minded as we are. An obvious choice was that of the Lemming, a rodent-like creature that is said to commit mass suicide. When I researched the issue, I found it to be an urban myth. Lemmings do not commit suicide. What happens is that they know how to swim, but sometimes the waterbody where they decide to swim is too large for their capabilities. That has given rise to this myth. I did, however, discover that among the thousands of life forms that populate the planet, a snake is known to eat its tail without realising it. It makes you wonder if our human species is like that serpent then, with the difference that while the snake does at some point realise that he is eating himself and backs off, we may not, till it is too late! A third troubling fact I discovered was we often actually came close to a nuclear conflict, but in the words of an American diplomat, 'we lucked out.

Frontlist : How could a conflict between Singapore and Malaysia escalate into a World War?

Rajesh : You know that it's a matter of historical record that the first World War started with the assassination of Archduke Franz Ferdinand, the presumptive heir to the Austro-Hungarian throne. The attack was made by a Serb. So, because of the assassination, war was declared first on Serbia by Austria-Hungary and Germany, who were allies. But Serbia was close to Russia, and they are still very close – so Russia too got involved in the conflict on Serbia's side. And then, with more and more countries joining in, we had a World War on our hands in no time.Yes, a hypothetical scenario discussed in the play is a possible conflict between Singapore and Malaysia and how that could escalate. In military terms, Singapore has technical superiority as a richer nation, but Malaysia has a much larger army being more populous. In my play, both countries immediately start looking for allies. Singapore approaches China for assistance because, as you may know, Singapore has a predominantly ethnic Chinese population. In the same way, in the scenario depicted in my play, Malaysia approaches Indonesia and Turkey for military assistance, which they agree to provide as fellow Muslim nations. And so, there is a possibility of more and more countries getting involved. Fortunately, both US and China intervened in my play, and the crisis was averted.

Frontlist : One of the situations you mention in the novel was undoubtedly influenced by Naveen Shekharappa, an Indian medical student who was the first Indian victim to die in Ukraine. Could you speak about the incident in more detail?

Rajesh : Naveen's death was a great tragedy, but his situation was not unique. At the time, thousands of students were in a similarly precarious situation. One of the characters in the play is also a medical student like Naveen. He has a beautiful young Ukrainian girlfriend, Olga, who is also a medical student. Together with one of Naveen's other friends, they are staying in a bunker to avoid artillery shelling and bombing by the Russians. Like Naveen, this boy also goes to buy groceries, and while he is away, there is a sudden resumption of artillery fire. Olga falls to her knees and starts praying for his safe return. Unlike Naveen's truly tragic case, this boy survives. I introduced this scene because I thought it would bring home to Indians the horrors of the war in Ukraine in a relatable fashion.

Frontlist : We are gradually destroying Mother Earth by poisoning her skies, forests, and oceans. Meanwhile, we're attempting to establish civilization on another planet. Do you believe we have lost hope of saving our planet?

Rajesh : That's an excellent question, thank you! Billionaire Elon Musk explained that he is investing hundreds of millions of dollars in journeying to Mars to explore the possibility of creating human settlements there. Earth, he fears, may not survive. Elon Musk is not suggesting anything new here; the American cosmologist Carl Sagan raised similar arguments a quarter century earlier. The idea is that humans should become two-planet species or multi-planet species. Billionaire Bill Gates believes it is far better to spend money saving lives on the planet. His charity has spent huge sums of money battling malaria and helping eradicate polio. Someone could say Musk is too pessimistic and Bill Gates too optimistic. Without getting into a Musk versus Gates debate, I would urge them both and other billionaires to give some thought to what can be done to alleviate the risk of nuclear warfare. I would suggest to Mr Musk that he should not give up on our planet so quickly and, with great deference, point out to Mr Gates that he should pause to consider the work he has done and all the lives he has saved while helping combat malaria and other diseases will come to naught in the event of a serious nuclear conflict.

In general, billionaires like to steer clear of confrontational politics; at the same time, would it not be worthwhile for these gentlemen to spend a small fraction of their enormous wealth looking for ways in which the looming prospect of nuclear annihilation was significantly reduced? This could take the form of organizing seminars, international conferences, creating a groundswell of public opinion, and so on and forth. The United Nations doesn't need to have a monopoly on these efforts. Mr Musk and Mr Gates are great problem solvers, and far be it for me to suggest what they could do to reduce the risk of nuclear warfare significantly. They can come up with innovative ways of handling this issue. If the world's richest men came together on the nuclear issue, including Indian billionaires such as Mr Adani, who has recently replaced Mr Gates as the world's fourth richest man, it would make a huge impact.

Frontlist : In your book, you also discuss extra-terrestrials. Do you genuinely believe in them, or are they purely fictitious?

Rajesh : Let me speak a little about human self-love here. Nothing wrong with a bit of self-love as long as you are not vain. Alas, we are a vain, narcissistic species and immensely disrespectful to our planet. We believe that we are the most important species on the planet. Mr Gates and his foundation spend hundreds of millions on saving human lives by combating diseases, a worthy task indeed, but does the preservation of 'balance' on the planet receive nearly as much attention? When I use the word 'balance,' I mean with the possible exception of cockroaches, mosquitoes, and rats, all life forms have an equal right to exist on the planet, but through our irresponsible actions,

so many species are now on the verge of extinction.As an extension of this narcissism, of feeling special, many of us believe that Earth is the only planet on which life exists. It is said that we live in eternity, but we also live in an infinite universe. No one knows where it begins, where it ends, and if it even ends. Given the vast, seemingly endless expanse and the presence of other universes beyond our own, the law of probability would suggest that other life forms must exist elsewhere too. Whether we can or will eventually establish contact with those extra-terrestrial beings is another matter entirely. One comment regarding the use of the word 'alien.' For us, other developed forms of life on other planets, should they exist, are aliens but to them, of course, we are the aliens. If you stop to think about it, we are more alien than anyone else, the genuine aliens, because we behave towards our planet like uncaring outsiders, as if Planet Earth is not our own home, that we need to take care of, even if it takes care of us and our needs.

Frontlist : How could a nuclear power that is currently responsible become reckless or even rogue tomorrow?

Rajesh : My play has a scene with a populist jihadi leader trying to convince Pakistan's Prime Minister to launch a nuclear strike on India. The Prime Minister of Pakistan rebuffs that suggestion, following the advice of one of his advisers. So far, so good, and this is a fictional scenario, but it remains true that there isn't a shortage of jihadis in Pakistan; many of them are popular and in politics. Just last year, in 2021, during a debate in Pakistan's National Assembly, Jamaat Ulema Islam's Abdul Shakoor suggested that Pakistan nuke Israel. Maulana Chitrali of the Jamaat-e-Islami asked Pakistan's Army Chief if the country's nuclear weapons were just artifacts to be displayed in a museum. Tomorrow, God forbid, if you have such crazy people acquiring still more significant clout in Pakistan's Parliament, there is no saying what can happen. Also, consider the current conflict in Ukraine. We might consider Russia a stable nuclear power, but that could change. Professor John Mearsheimer of the University of Chicago recently spoke of how there was no telling what could happen when a military superpower such as Russia is pushed to the wall or believes that it is moved to the wall. Now Professor Mearsheimer is the a uthor of a thick but brilliant tome titled The Tragedy of Great Power Politics and is a kind of world authority on how great powers behave. If the Russians start to lose in Ukraine, President Putin's leadership will be questioned, and rather than face loss, he may feel tempted to push the forbidden button. You can only imagine what might happen next.

Amish Tandon *Author of Indian Citizenship and Immigration Law*

Amish Tandon has been a Corporate Commercial Attorney in New Delhi for more than 8 years, with extensive experience in Litigation and Corporate Advisory. He has also been actively associated with not-for-profit organizations providing legal aid to the needy on a pro bono basis. Amish regularly conducts seminars, talks, and training on 'Sexual Harassment in the Workplace.' Further, he often contributes articles for law journals, newspapers, and blogs on various legal issues.

Frontlist : How did you utilize this book to convey what it means to be an Indian citizen and the different ways in which one might do so?

Amish : In simple terms, citizenship may be described as a legal status conferred by a state to "its people," whose status comes with rights and obligations for both the citizen and state. Citizenship is really about individuals' relations with the state and each other. Every fragment in the Concept of Citizenship in the context of Indian Law is discussed in this book. The book discusses the relationship that an Indian citizen has with the state. Further, this book also discusses the (Indian) Immigration Law Framework with special emphasis on the recently enacted Citizenship Amendment Act (CAA) and National Register of Citizens (NRC).

Frontlist : Why are border states like Assam a significant example of this predicament, and who is the CAA supposed to assist?

Amish : Assam has been a hotspot for illegal migration since independence, especially from Bangladesh, and the problem persists. It is for this reason that the Assam Accord was signed in the year 1985, and a promise was made to carry out an exercise to identify and deport illegal migrants from Assam, also called Assam NRC (an exercise which came to fruition with the judgement of the Supreme Court popularly called the "Assam NRC Judgement"). In this context, the implementation of CAA in Assam poses a separate set of grievances for its indigenous populace and challenges for the authorities. The grievances here include violation of the Assam Accord, the undoing of the Assam NRC Judgement, jeopardy to the Assam NRC, violation of the provisions of the Indian Constitution, etc. This issue has been given a special place in my book, and almost two chapters have been dedicated to this.

Frontlist : How can scholars and lawyers who practise and specialize in this area of law use this book as a research tool?

Amish : While writing this book, an honest effort has been made to cover every aspect of the Indian law in the citizenship and immigration space, from independence to date. Further, an attempt has been made to cover and incorporate every judicial precedent on the subject. As mentioned earlier, there is little legal literature available in this area, and this book has been authorised to cover just that. This book aims to provide practitioners with a ready and detailed commentary succinctly covering every facet of this law in one place, complete with all case laws on the subject.

Frontlist : "The Delhi High Court Guidelines" were created in 2010 regarding issuing a LOC. What are your thoughts on that?

Amish : A Look-Out-Circular (LOC) is a document issued by specific government authorities to trace absconding persons and to keep a watch or track the movement of persons (entering India and going out). The principal idea behind this is to ensure that a person is available for interrogation, inquiry, or trial, as required, and does not "disappear." Under Indian law, a LOC is governed by executive instructions. These executive instructions have been in place since 1979 and have been modified from time to time. However, these executive instructions were not considered detailed enough. Also, there were gaps in these executive instructions. The Delhi High Court, in the case of "Sumer Singh Salkan v. Assistant Director," decided to formulate detailed guidelines for the issue of LOC, pursuant to which the Ministry of Home Affairs issued an office memorandum dated 27.10.2010 on the subject wherein the first time detailed guidelines for issue of LOC were codified. These have been in force since then. The above guidelines are not fully comprehensive, and we have often seen courts interfere with the issue of LOC and pass additional directions to fill in gaps. The government may consider amending the executive instructions from time to time to keep up with changing times and trends.

Frontlist : Do you have any noteworthy discoveries from your study for the book that you would want to share with us?

Amish : My study for this book showed me how layered and complex the issues of citizenship are for a country like India, which has witnessed migration issues since its creation.

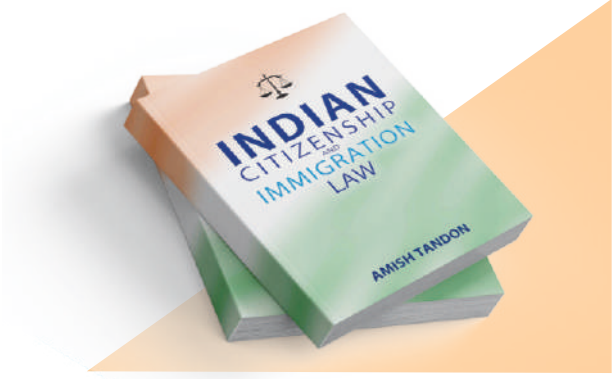

Atul K Thakur *Author of India Now and in Transition*

Atul K Thakur is a public policy professional, management consultant, journalist, and writer specializing in the interface of politics and economics. His research and writing interests extend to macroeconomic policies and international affairs, focusing on South Asia. He is an alumnus, inter alia, of Banaras Hindu University and has worked across sectors, spanning policy research, management consultancy, publishing, and media. India Now and In Transition is his second book as an editor. He has edited India since 1947: Looking Back at a Modern Nation (Niyogi Books, 2013), significant work on modern India. He is working on a book on Nepal's complex political-economic transitions and ethnicity issues. He has written extensively for many prominent newspapers and websites as a journalist and columnist. He is also a literary critic, having reviewed hundreds of books for leading publications in India and abroad.

Frontlist : India Now and In Transition - the sequel of India Since 1947: Looking Back at a Modern Nation book is the compendium of 37 essays delineating India's transition from an agrarian to an urban society. How does this book assist the young generations in comprehending the present situation in India?

Atul : Honestly, this was the first idea that confirmed my inner call to attempt to bring out a comprehensive collection of essays, written without any preoccupation or entering into the prognosis. As the centrality of thought rested with 'India,' I naturally had to count on its brightest tribute, democracy, and inspire myself and fellow writers to delve into the complex subjects with which India was concerned then and will be in transition. As an editor, I work on something to make it compatible with the readers' expectations. As a writer, first, I answer my own queries. Usually, I read a lot—not to write anything in particular but to stay in a mental state where I can silently cope with the chaos of ideas. The beauty of India is that there are many kinds of India. Understanding the fundamentals that have given birth to such multiplicity across various segments is especially imperative in the present day when the 'Idea of India' keenly needs to be well-understood.India Now and In Transition is thus an enquiry into possible futures based on current happenings. In confession, I thought about working

on a book after reading full-time for one-and-half decades – and writing extensively on opinion/edit pages of broadsheets. Being a compulsive reader, it was somehow natural to tempt and turn as a columnist and writer – to find a way of expression.India Now and In Transition offers fresh insights into several crucial areas and elements that have shaped India into what it is today, whether that be the complex set of relations under the country's federal system, the challenges of territorial/cultural diversities, and the contradictory outcomes of economic reforms, among others. This book looks diligently at the successes and failures of India's tryst with democracy, which—despite having challenges—is charting its course ahead. India is the world's largest democracy with 75 years of independent existence. Its unique and ever-changing nature has sparked a great degree of academic debate before and since Independence. Our nation has the world's largest youth population and is undergoing tectonic social and political changes. Therefore, understanding what directions India may take in the future is essential for every thinking individual.Featuring contributions from leading thinkers and scholars in diverse fields, each essay in this volume critically analyses a significant theme of India's present to propose the possible way ahead for our emergent nation. Covering the areas of politics and governance, economics and development, security and foreign policy, society and culture, and language and literature, the book shows that—while beset with both internal and external challenges on many fronts—India isn't waiting for its moment, it's making its moment happen. The book attempts to reach out to different segments of readers, including young generations, and it is heartening to receive their positive feedback on the book

Frontlist : Having a definitive constitution, our voices are still suppressed by India's administrative system. In your opinion, can we still address India as a democratic country?

Atul : Our country is the world's largest democracy and is uniquely endowed with an inclusive Constitution. It offers enough provisions to keep the balance of power by clearly underlining the roles and responsibilities of the legislature, bureaucracy, and judiciary. It also empowers the citizens with equal rights (including freedom of expression) irrespective of caste, creed, and ideological beliefs. It should be a matter of concern if the institutions fail to safeguard the freedom of expression. Notwithstanding the challenges, I don't keep a pessimistic view about the future of India. Its fundamentals are strong. Our collective dream should be to attain greater socio-economic inclusion.

Frontlist : India has advanced significantly since 1947. However, the growth rate is not as spectacular as we initially believed. What key factors hinder the nation from spreading its wings and gaining prominence worldwide?

Atul : India has traveled a long journey on the economic front. It is one of the world's leading economies and possesses a prominent place in the world order. Since 1947, India's policies for attaining inclusive growth have not been uniform. More so, from 1991 onwards, with the opening of the economy and making a level playing field for the private sector, progressive reformist measures were adopted without slowing down the growth in the past. Pandemic and a few other factors, including policy changes, have created ripple effects, but we can expect the return of normalcy in the coming times.

Frontlist : Where does Indian Literature stand regarding censorship in retrospect of past controversies? Why are the works of literary bearers opposed to being published, as everyone has the right to present their views and opinions?

Atul : Well, there are exceptions. Publishers and writers have to make a fine balance while working together. In an era when social media spreads unfiltered preoccupied views too fast, it would be too simplistic to attribute the adverse credit to the system. Technology and organized communication plans are other factors that set the narratives and finally influence the outcomes.

Frontlist : In this book, you have catered to numerous aspects that help in India's trajectory. Which part requires more attention according to recent developments and why?

Atul : This should be left for the readers to decide. They are the best judges of printed words.

Frontlist : What is the meaning of Modern India to you? Do you believe that we will ever attain the concept of an equal society?

Atul : India is a modern nation with promising democratic attributes. Barring exceptions, we have come a long way in making an equal society, and people are now more sensitive toward rights and creating an inclusive ecosystem. We should think and work to make a better world, and India's stake in it will undoubtedly be very high.

Frontlist : Do you believe that the Modi government can transform India into the nation you envision, or do their actions only serve to advance their own personal interests? Please share your thoughts.

Atul : This is a transitory matter, and one can't be sure about the future possibilities. However, it is always wishful that the government keeps the welfare of the masses as the top priority. We must be hopeful.

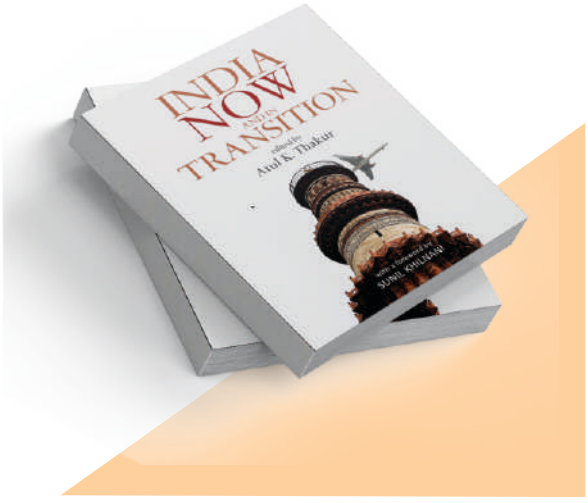

Priya Hajela *Author of "Ladies Tailor"*

Priya Hajela is a fiction writer who lives in Pune with her husband and two dogs. Writing is a second career for her. She graduated with an MFA in Creative Writing from Goddard College in Vermont in 2017. Before writing, Priya got an MBA from Vanderbilt University in 1992 and worked in various Telecom and IT organizations in Senior Marketing and Business Development roles for 22 years. One of Priya's short stories, An Affair, was published in Indian Ruminations. A second short story, The Tattoo Artist, was published in Live Encounters. A third short story, Daughters' Revenge, recently appeared in Kitaab.

Frontlist : Working as an employee at IBM and then resigning from it to start your career as a writer. What was the primary motivation behind opting for this decision?

Priya : My decision to quit corporate life was long overdue. I had previously quit Tata Communications, and gone soul searching but had not come back with writing as the next step. I had only been out of work five months when IBM came calling, and I rushed back in. I think there should come a time in people's lives when money is no longer the primary motivator, and one should look for ways to learn, challenge oneself, look on the inside and find the closed boxes that need to open up and aired. It is not an easy thing to do, and most people are either unwilling, unable, or uninterested in doing it. I found the will as well as the logistical support and went ahead.

Frontlist : Are you interested in writing in any other genres besides fiction?

Priya : I like telling stories, spinning something out of nothing, and I sometimes write short pieces on my views on life. The book Ladies Tailor is about Gurdev, a survivor who joined a group of refugees from East Pakistan after the Partition.

Frontlist : Why did you decide to write a novel with this particular plot?

Priya : I was interested in the Partition because my grandparents were affected by it. I was keen to learn more about the time, the experiences, the choices, the tragedy, and the rebuilding. I was particularly interested in rebuilding. It takes a particular kind of person to start something entirely new and unfamiliar. Most people restarted the businesses they had already been running on the other side.

Frontlist : Since your story has elements like marriage, friendship, and love, can we call it a romantic novel?

Priya : Ladies' Tailor has those elements, but I wouldn't say it is a romantic novel because it has so much more. There is adventure and intrigue, a little suspense, a little brotherly love, and a smattering of romance.

Frontlist : Would you please briefly describe your book's protagonist, Gurdev? Has a real-life person influenced the character?

Priya : Gurdev is a tall, handsome Sardar who is mostly a good guy but believes he knows everything. He is dismissive of his wife and even his business partners at first. He learns life's lessons the hard way, first from his wife and later from Noor. His acknowledgment of Jagat as a level-headed young man is part of Gurdev's transformation. A single real-life person has not influenced the character. Gurdev is a combination of several people I've known over the years. My grandfather was strong and silent. He loved food just like Gurdev, but he was not an adventurer or a seeker. I created Gurdev the way I did because many men of that generation have this feeling of invincibility, and I wanted to address that.

Frontlist : An incident in your book refers to the Partition done by the Britishers on June 3rd, 1947. Could you please tell us more about it since you have researched it?

Priya : June 3rd, 1947, is the day Mountbatten announced the Partition of the two countries. The actual lines were finalized on August 17th, 1947, but communal violence, seeded in the Eastern part of the country, slowly moved West in the interim.

Frontlist : Could you please tell us more about your writing experience so far? Do you have any advice you would like to provide other aspiring writers or us?

Priya : My writing journey has been long and arduous, and I did not want to take any shortcuts and don't recommend writers to look for them. I just read an article about writer Colleen Hoover and her literary success, leveraging 'angsty love scenes, catchy premises, extensive sex scenes, and outrageous plot twists.' So, it all depends on what you want to write, how adventurous you want to be to promote your writing, and how quickly you can write your next book and keep your fans satisfied.

Mynoo Maryel *Author of "The BE Book"*

Mynoo Maryel is a visionary, author, artist, and spiritual friend who was a highflying Corporate Executive and pragmatic Serial Entrepreneur. At the pinnacle of an impressive career, Mynoo stepped away from her hamster-on-a-wheel life and leaped out into the great unknown. She landed, on both feet, in pure magic, where expecting and accepting miracles are the norm. The BE Book is her extraordinary story.

Frontlist : In what way can your book be helpful to the young generation currently starting their journey as adults?

Mynoo : It is easy to get caught up in winning the DO RACE, and very soon, we lose the perspective of why we are engaged in doing so much. It feels like every time we reach a goal; there is a new one to aspire to. The DOING DOING DOING begins again, and again and again. The BE Book shows you a way of enjoying the journey while harnessing every opportunity and keeping yourself rejuvenated by mastering the BEING DOING Dance, like a Tango that equips you to live your passion NOW.

Frontlist : How can one embrace self-love and kindness towards themselves even when the world doesn't always give this to others?

Mynoo : We can wait for the world to give us what we desire to be our experience of living this life, or we can seize the day and choose our own needs. In my philosophy, you are your world; you can share generously with others only what you can give and receive for yourself. If you wait for others to give it to you, you enter the upsetting realm of blame and victimhood.Know that you are the one you have been waiting for, BE Love, and you will be loved, BE Kind, and you will experience kindness, BE Free and you will feel free. Remember, it is BE, and you HAVE. That is the meaning of BEHAVE. It is BE the CAUSE you care about; that is the meaning of BECAUSE.

Frontlist : You've mentioned how religion and spirituality have helped you in various ways. How do you think they can improve people's lives and well-being?

Mynoo : Spirituality is the connection to your spiritedness and activates your expression of your truth. So whatever gives you the courage to step into owning the fullness of you and placing you in a state of loving all aspects and facets of you, the good, the bad, the ugly, and the beautiful, and doing so with compassion and kindness, will serve you by honoring your own worthiness. I am a propagator of this reconnection to our own spiritedness. If religion gives you access to that, then work with that; if a walk in nature does that, then use that as your opening to reconnect to your spiritedness, and that way, you also honor that in others. And you all will experience Joy, Ease, Grace Omnipresent.

Frontlist : There's a topic on the "Miracle of Divorce" in your book. How can Indian women find this liberating and empowering rather than a stigma or a taboo topic?

Mynoo : I was one such Indian woman in my marriage, where I experienced domestic violence from the first year of marriage. I thought with love I would be able to turn around the trauma that this experience would inflict on me every time it occurred. Divorce was taboo due to the stigma it would leave on my family. I was in London and going through this escalating violence at home, and my family would be left to endure this stigma. So I allowed my self-esteem, self-worth, and connection to myself to be destroyed month after month, year after year, simply hoping that he would change. And the relationship would return to the time we first fell in love. It got worse, then worse, and then life-threatening, and because I felt this threat now affected not just me but my son too, I finally took the step and got a divorce. It was a HUGE choice that boosted my self-worth, I regained my confidence, and the powerful bright, vibrant young girl returned. It transformed the upbringing I was able to offer my child, and I started owning and recognizing my gifts rather than being afraid to share them.There is a point in any relationship when you know enough is enough, and it's time to complete the relationship powerfully and reclaim your power over your joy and happiness. That is why I call it the Miracle of Divorce. I continued for 9 years longer than I should have, and it continues to be one of the most thrilling, challenging, and uplifting experiences that brought joy to everyone in my family.

Frontlist : With testimonials contributed by people for the book, can this be said that people desire well-being and self-improvement in their lives more than materialistic gains?

Mynoo : There is a growing realization that ONLY focusing on material gains offers instant gratification. To experience ongoing fulfillment, there is something beyond material gains. There is a growing quest for a deeper connection to the meaning and purpose that people are seeking. I experienced a magical shift from being on a hamster wheel. Whenever I thought I had reached my goal, it was only another rung on a hamster wheel. There was no time or space to stop and enjoy. I HAD to keep moving because I was on a wheel thinking I was making progress, but actually only staying in one place, getting exhausted, disconnected, and feeling powerless, unable to find any time to enjoy what I was creating.Choosing the BE Lifestyle opened the doorway to self-liberation and enabled me to enjoy the journey, giving me access to greater vitality to accomplish my life's mission. It does the same for others. Hence, I suggest creating a BE List of words that define what you are going to BE today and allow the doing to flow.

Frontlist : Why do people often listen to their minds

Heart-Brain, and the Gut-Brain. Each of these is connected to different organs and systems of our body and impacts their wellbeing. The Mind is all about survival and is impacted by the experiences of the past and anticipations of the future. The Heart, on the other hand, focuses on the NOW. And the Gut is the instinct informed by our inner wisdom.When you focus on your Heart, your choices will be a pure representation of the facts you have access to. The facts in the matters will inform your decisions. Mind-based decisions are colored by your past experiences and the perceptions you may hold about your future. Remember, neither the past nor the future is real; the only reality is what you are at the moment. So your Heart-based decisions are the factual ones with the capacity to move you forward without any baggage of the past or future.

Frontlist : People experience many things in life but don't always learn from them. What prevents them from "absorbing" them and applying the same?

Mynoo : Something happens and based on its effect on us, we make it mean something. It's the meaning that generates a myriad of feelings within us, giving rise to more thoughts about what occurred, creating a perceived reality of what occurred. So the factual occurrence is easily forgotten to get drawn into the meaning realm, which keeps multiplying. It becomes an experience loaded with meaning-based emotions. We move from being in a state of learning from what occurred to being consumed by blaming and feeling sorry for ourselves or being in a state of bravado for our win. To learn from what occurred, it is important to acknowledge how we feel about what occurred and stay focused on the facts in the situation. This way, you do not get caught up in the emotional spinning triggered by meaning. You can factually see what's yours to learn and then use that learning to take one specific action within twenty minutes of getting the learning. This supports you to multiply the benefits from the learnings from any situation.

Frontlist : Although you've mentioned sharing our gifts to the world for abundant growth, why do you think people are reluctant to do so, and how can this be avoided?

Mynoo : People are often unaware of their gifts and talents, feel that it is not appropriate to show off, or fear that they may lose them if they share them.The first step is to identify your gifts distinct from what you have seen in others. Once you have identified them, acknowledge how these gifts have served and supported you. Look at specific situations or relationships that were positively impacted by you utilizing your gifts. Now consider a goal or a challenge you have in front of you. Envision what will be possible if you approach this goal or challenge by utilizing and sharing your gifts. What difference will it make to you and others regarding the outcomes? Then begin by taking your first baby steps, choose what is your logical next step to share your gift, and get started.I begin my morning by expressing gratitude and appreciating my gifts and talents and end the day by acknowledging what became possible due to sharing them. This way, I keep my connection going and sharpen my gifts by sharing them daily and in every way with humility and generosity with the precise intention of making a positive difference.

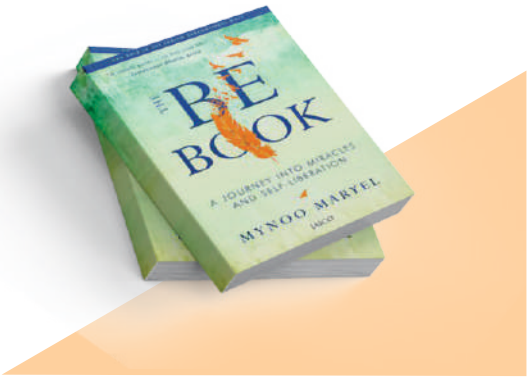

प्रतीक भारत पालोरी, लेखक : "उजला दर्पण"

माँ वीणावादिनी की कृपा से **प्रतीक** ने अब तक सात पुस्तकें साहित्य एवं पाठक जगत को समर्पित की हैं, जो सभी अलग–अलग विशिष्ट विधाओं में हैं। प्रतीक की लेखनी को कुछ ऐसा आशीर्वाद है कि वो गद्य तथा पद्य में शौर्य, हास्य, श्रृंगार एवं सामाजिक चेतना पर एक समान सहजता के साथ लिख पाते हैं। और इसी के साथ उनकी प्रयोगवादी सोच उन्हें नियमित रूप से एक नए विषय एवं प्रारूप में लिखने को प्रेरित करती रहती है। उनकी रचनाओं की ऐसी ही विविधता के कारण उन्हें इण्डिया बुक ऑफ़ रिकार्ड्स 2011 में 'मल्टीफैसेटेड ऑथर' के रूप में स्थान दिया गया।

फ्रंटलिस्ट: आपने कहानी, निबंध और कविता को एक किताब में क्यों जोड़ा? आप इन तीनों में से किस श्रेणी में लिखना पसंद करते हैं?

प्रतीक : मूल रूप से मैं एक कवि हूँ और कविता में स्वयं को अभिव्यक्त करना मुझे सर्वाधिक प्रिय है। किन्तु प्रत्येक विषय, सन्देश और पाठक के लिए कविता एकमात्र उपयोगी माध्यम नहीं बन पाती है। इसलिए मैं कथा और निबन्ध भी लिखता हूँ। मैं एक प्रयोगधर्मी लेखक हूँ और मेरी सभी पुस्तकें विभिन्न विधाओं में रही हैं। ऐसे ही एक प्रयोग के रूप में एक से अधिक विधाओं की सम्मिलित पुस्तक को मैंने नाम दिया 'कनिका'–कथा, निबन्ध, काव्य। एक ही पुस्तक में तीनों विधाओं और विविध विषयों के आने से ये सभी प्रकार के पाठकों के लिए रुचिकर बन पड़ी है, ऐसा मेरा

विश्वास है।

फ्रंटलिस्टः आपने इतनी विविध लेखन शैली कैसे विकसित की? आपको लिखने के लिए क्या प्रेरित करता है?

प्रतीकः विविधता मेरी दुर्बलता भी है और शक्ति भी। मुझे एक ही प्रकार से कोई कार्य करना अच्छा नहीं लगता, चाहे वो बाल बनाना हो या मंच पर प्रस्तुति देना। कविताओं में मैंने अनेक प्रकार के प्रयोग किये और भाँति–भाँति की छन्दबद्ध एवं छन्दमुक्त रचनाएँ लिखी। इस क्रम में मैं पढ़ता भी रहता हूँ और अनेक श्रेष्ठ लेखकों को पढ़ते हुए विभिन्न विधाओं में लिखने की इच्छा और प्रेरणा जगती है। किसी भी शैली में लिखने के लिए मैं उसे जी भर कर पढ़ता हूँ और आत्मसात् करता हूँ। मेरे लिए लेखन का मूल उद्देश्य होता है समाधान देना। मैं अपनी इस कला का उपयोग व्यक्ति, समाज, संस्थान व देश को उनकी समस्याओं के सहज एवं व्यावहारिक समाधान देने के लिए करना चाहता हूँ और इसी से मुझे लेखन की प्रेरणा मिलती है।

फ्रंटलिस्टः आपकी पुस्तक देशभक्ति, प्रकृति और ईश्वर सहित विभिन्न विषयों को छूती है। आप अपनी पुस्तक के माध्यम से पाठक को कौन–सी महत्वपूर्ण शिक्षा देना चाहते हैं?

प्रतीकः मेरी प्रत्येक रचना में निहित सन्देश या शिक्षा यही है कि व्यक्ति अपने और अपने सम्पूर्ण वातावरण के प्रति सजग, सकारात्मक और सम्वेदनशील रहे। मैं 'संस्कृति का लेखक' कहलाना चाहता हूँ और इसी सोच के साथ अपने संवाद की रचना करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि एक पाठक मेरी रचनाएँ पढ़ का प्रसन्न और प्रेरित अनुभव करे। मेरा ये दृढ़ विश्वास है कि अन्य की आलोचना के स्थान पर आत्मान्वेषण से हम बहुत कुछ सम्भव बना सकते हैं।

फ्रंटलिस्टः पूरी किताब हिंदी में होने के बावजूद एक निबंध है जो अंग्रेजी में है जो पाठक को बहुत आश्चर्यचकित करता है। ऐसा करने का उद्देश्य क्या था?

प्रतीकः इस पुस्तक में दो निबन्ध अंग्रेज़ी भाषा में हैं। एक श्रीराम एवं श्रीकृष्ण के सन्दर्भ में और दूसरा कैमरा के सन्दर्भ में। विषय एवं उसके अपेक्षित पाठकों को ध्यान में रखते हुए इन्हें अंग्रेज़ी में लिखा गया था। इसके अतिरिक्त कोई विशेष मंशा नहीं थी। सम्भवतः मेरे मन में ये सुसुप्त इच्छा भी रही हो कि मैं अपना अंग्रेज़ी लेखन का कौशल भी पाठकों के समक्ष रखूँ।

फ्रंटलिस्टः कौन सा एक निबंध, कविता और कहानी है जिसे आप पाठक को सुझाते हैं कि उन्हें निश्चित रूप से पढ़ना चाहिए।

प्रतीकः अपनी ही रचनाओं में से किसी एक को चुनना तो अपने बच्चों में भेदभाव करने जैसा होगा। मेरे विचार में प्रत्येक पाठक के लिए कोई एक विशेष रचना महत्वपूर्ण या रुचिकर हो सकती है। फिर भी यदि मुझे चुनाव करना ही है तो मैं चाहूँगा कि प्रत्येक पाठक मेरी बाल–कविता 'महत्त्वाकांक्षी' अवश्य पढ़े। इसमें मेरी शब्द–शक्ति, रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति, बाल–मनोविज्ञान की समझ और देशप्रेम का श्रेष्ठ मिश्रण देखने को मिलेगा।

फ्रंटलिस्टः देशभक्ति, एसिड अटैक आदि जैसे संवेदनशील विषयों पर लिखते समय आप किन प्रमुख बिंदुओं का ध्यान रखते हैं?

प्रतीकः मेरा मूल लक्ष्य होता है किसी समस्या एक मौलिक और साहसी हल सुझाना। एक ऐसा हल जो बहुत बार हमारे मन में तो कुलबुलाता है, किन्तु हम अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं।

हरकीरत सिंह ढींगरा, लेखक–'चिकनी चुपड़ी'

हरकीरत सिंह ढींगरा जी का जन्म, भारत के सबसे खूबसूरत राज्य हिमाचल प्रदेश में शिमला के पास बसे समर हिल्स की सुरम्य पहाड़ियों के बीच देश की आजादी के नौ साल बाद हुआ था। सिविल इंजीनियरिंग कर, 20 वर्ष से भी कम आयु में ही इन्होंने नौकरी शुरू कर दी थी। अक्टूबर 2005 में बिट्स पिलानी से इंजीनियरिंग की स्नातक डिग्री भी हासिल की। पहले प्राइवेट, फिर CPWD और BHEL में कुछ वर्षों तक कार्यरत रहे। इसके पश्चात महारत्न कम्पनी NTPC लिमिटेड में 33 वर्ष के लंबे अंतराल तक कार्यरत रहने के उपरांत अगस्त 2016 में सेवानिवृत्त हुए।

इन दिनों वह अपने खाली समय का सदुपयोग, अपने आसपास की वस्तुएँ, घटनाओं और प्रियजनों के साथ बिताए कुछ मधुर लम्हों एवं कुछ खट्टी–मीठी स्मृतियों को शब्दों में पिरोकर पृष्ठों पर उतारते हैं।

"चिकनी चुपड़ी" है कविता संग्रह, उनका लेखनी के क्षेत्र में प्रथम लघु प्रयास है।

फ्रंटलिस्टः "आकस्मिक कवि" से आपका क्या तात्पर्य है?

कविताएँ लिखना आपका शौक है, या आपने उन्हें गलती से लिखा है।

हरकीरतः **"आकस्मिक कवि"** मैं अपने आपको इसलिए मानता या कहता हूँ क्योंकि 60 वर्ष कि आयु तक मैंने अपने जीवन में कभी कुछ नहीं लिखा। कोई कविता पढ़ने को मिली, अच्छी लगी पढ़ ली, साझा कर ली। **"आकस्मिक"** शब्द मैंने बॉलीवुड कि मूवी "Accidental Prime Minister" से लिया है। मैं ये मानता हूँ कि मेरा कविता लिखना आकस्मिक ही था क्यूंकि जैसा मैंने अपनी 'चिकनी चुपड़ी–कविताओं की खिचड़ी' में लिखा भी है कि, 19 जून 2016 को मैंने अपना बहुत प्रिय मित्र "दीपक राज सक्सेना" को अचानक खो दिया। उनका जाना मेरे लिए अकल्पनीय था, अप्रत्याशित था, असहनीय था। उसके जाने ने मुझे एक शून्य में धकेल दिया था, आज तक मैं उसके बिछोहे से उभर ही नहीं पाया, शायद उभर ही न पाऊँ, ता–उम्र। लेकिन सबसे पहली कविता मैंने अपने उस मित्र कि यादों को, एहसासों को, उसके साथ बिताए पलों को, 43 सालों के सफर को याद कर, लिखी थी, कविता का शीर्षक था **"और फ़लैशबैक चलती रही"** मेरी यह कविता ने मुझे संभाला, समान्य होने का अवसर दिया। मेरी इस कविता को मेरे परिवारजनों, मित्रों ने जो कि दीपक के भी मित्र थे और दीपक के परिवार वालों ने भी बहुत सराहा।

उसके बाद अगस्त 2016 में सेवानिवृत्त हुआ तो साधारणत्या 2–3 दिन में एक कविता लिखने लगा। किसी वस्तु को देख, किसी वस्तुस्थिति को देख, किसी याद को याद कर, किसी एहसास से जो मन को छू गया, कोई आप–बीती याद कर कविता लिख लेता था। मैं किसी भी तस्वीर को देख अगर पहली दो पंक्तियाँ लिख लेता था तो मेरे को, उसे कविता का स्वरूप देकर ही सुकून आता था। इस प्रकार अगले 3–4 वर्ष में मैंने 175 से भी अधिक कवितायें लिख डाली। तो इस प्रकार में कवितायें लिखने को गलती तो नहीं कह सकता, लेकिन मेरे इस लेखन के सफर ने मुझे एक नई दिशा दी, जीवन में आगे बढ़ने कि प्रेरणा अवश्य दी। शायद इसीलिए मैं अपने आपको एक **"एक्सिडेंटल कवि"** यानि **"आकस्मिक कवि"** कहता हूँ।

फ्रंटलिस्टः **आपने अपनी कविताओं को ऐसे नाम क्यों दिए जो उतने ही सामान्य हैं जितने वे हो सकते हैं? ऐसा लगता है कि आपने उनका नाम लोगों की रुचि बढ़ाने के लिए रखा था।**

हरकीरतः ज्यादातर, मेरी कविताओं की विषयवस्तु किसी चित्र/वस्तु को देख, किसी वस्तुस्थिति को देख, किसी याद को याद करके, किसी एहसास से जो मन को छू गया हो, कोई आप–बीती को याद करके, लॉकडाउन में मन कभी उदास हुआ, कोई किस्सा सुना, या कोई असामान्य आपबीती हुई, तो मैं जो कविता लिखता था, कविता का शीर्षक भी कविता से ही ढूँढ़ कर लिखता था। आज मैं कह सकता हूँ, कि मेरी कविता के शीर्षक रोचक थे, इसीलिए पाठकों कि रुचि भी बढ़ी और मुझे संतुष्टि भी मिली। बहुत से पाठकों ने अपनी प्रतिक्रिया में मुझसे कहा कि, आपकी कविताओं के शीर्षकों के अलग होने कि वजह से ही कविता पढ़ने की जिज्ञासा को बढ़ाया है।

फ्रंटलिस्टः **पुस्तक में आपकी कौन सी कविता आपकी पसंदीदा और सबसे व्यक्तिगत है? और क्यों?**

हरकीरतः जिस प्रकार शिल्पकार को, कुम्हार को अपनी हर कृति अच्छी लगती है, ठीक उसी प्रकार मुझे अपनी हर कविता अच्छी लगी। एक का नाम लूँगा तो दूसरी नाराज़ हो जाएगी। सबसे व्यक्तिगत तो **"और फ़लैशबैक चलती रही" (46)** ही है। इसके अलावा **"पिता पुत्री में बंधी होती है इक डोर" (55); "बदलता रहता हूँ बार बार अपना अक्स" (60); "उम्र में दो साल छोटे हो" (105)** और **"कहाँ कोई फूल भेजता है खत में"(44)** हैं। लेकिन और भी बहुत सी कवितायें मुझे बहुत प्रिय है।

कुछ और पसंदीदा कविताएं इस प्रकार हैं.....

भुट्टा, सौगात बरसतों कि (35); देखा ही नहीं उसको (36); पगड़ियाँ रंग बिरंगी (80); गुफ्तगू उनकी आईने से (84); इलायची– "छोटी मोटी" (87); मुझे मत बांधा, खूँटे से माझी (96); हँसते जख्म मूवी (121); खामोशियों की अपनी जुबां होती है (141); शहीद और उसके जन (157); मेहंदी और आचार" (177).

ये सभी कविताएँ मेरी पसंदीदा और व्यक्तिगत है, पर क्यों है लिखुंगा तो, एक पूरी किताब बन जाएगी। आप इन कविताओं को पढ़ेंगे तो आपको स्वयं ही एहसास हो जायेगा कि ये मेरी पसंदीदा और व्यक्तिगत क्यों हैं।

फ्रंटलिस्टः **आपको कब एहसास हुआ कि आप कविता में रुचि रखते हैं और आपकी कविताएँ सामान्य नामों पर आधारित होंगी?**

हरकीरतः जैसे की मैंने प्रश्न 1 में ऊपर बताया कि अपनी पहली कविता **"और फ़लैशबैक चलती रही"** लिखने के बाद मैं रुका नहीं। मुझे एक अच्छा माध्यम चाहिए था अपने आप को संभालने के लिए। 8–10 कवितायें लिखने के बाद मुझे सुकून भी मिला, दोस्त को खोने कि छटपटाहट से भी राहत मिली। तब मुझे लगने लगा कि मैं नवांकुर कवि/लेखक की श्रेणी मैं आ गया हूँ।

रही बात कविताओं के नामों की, मेरे तो यही मानना है कि मेरी कविताओं के नाम सामान्य है, कविता में क्या है, ये दर्शाते हैं, पाठक का ध्यान अपनी तरफ खींचते हैं।

फ्रंटलिस्टः **आपकी पुस्तक के शीर्षक ''चिकनी चुपड़ी'' कविताओं की खिचड़ी का उद्देश्य क्या है?**

हरकीरतः मेरी पुस्तक का शीर्षक **"चिकनी चुपड़ी–कविताओं कि खिचड़ी"** मेरी कविताओं के बारे में दर्शाता है। पुस्तक का नाम **"चिकनी चुपड़ी"** मेरी श्रीमति जी ने सुझाया था। कहा कि आप चिकनी चुपड़ी बातें बहुत करते हैं, तो यही नाम अच्छा रहेगा। **"कविताओं कि खिचड़ी"** टेग लाइन का सुझाव मेरा अपना था, क्योंकि पुस्तक छपने तक मैं करीब–करीब 175 से अधिक कविताओं लिख चुका था। जिनमें से इस पुस्तक में करीब 101 कविताएँ शामिल हैं। जैसे कि मैंने पहले भी बताया कि ज्यादातर मेरी कविताओं का विषयवस्तु किसी चित्र/वस्तु को देख, किसी वस्तुस्थिति को देख, किसी याद को याद करके, किसी एहसास से जो मन को छू गया हो, या कोई आप–बीती को याद करके, या फिर लॉकडाउन में मन कभी उदास हुआ, कोई किस्सा सुना, कोई असामान्य आपबीती हुई....मेरी प्रत्येक कविता हर दूसरी कविता से भिन्न है, अलग है। मेरी कविताओं का समूह में बहुत विविधता है इसीलिए इसको मैंने टैग लाइन दी **"कविताओं कि खिचड़ी"**

याद करके, किसी एहसास से जो मन को छू गया हो, या कोई आप–बीती को याद करके, या फिर लॉकडाउन में मन कभी उदास हुआ, कोई किस्सा सुना, कोई असामान्य आपबीती हुई.... मेरी प्रत्येक कविता हर दूसरी कविता से भिन्न है, अलग है। मेरी कविताओं का समूह में बहुत विविधता है इसीलिए इसको मैंने टैग लाइन दी **"कविताओं कि खिचड़ी"** इस विविधता में ही खिचड़ी की तरहं शुद्ध घी जैसी सोंधी सोंधी खुशबू है–मेरी यादों की, एहसासों की, आपबीती की, मेरे ख़्यालों की, दर्द की, आभास की, मेरे अवलोकन की, विमोचन की, प्रतिक्रिया की..... जी हाँ मेरी पुस्तक है **"चिकनी चुपड़ी–कविताओं कि खिचड़ी"**।

फ्रंटलिस्ट: **आपने अपनी पुस्तक में जो लघुकथा शामिल की है, उसमें क्या अद्वितीय है और क्या यह कविताओं से भिन्न है?**

हरकीरत: मेरी पुस्तक के अंत में मैंने जो लघुकथा शमिल की है, वो लघुकथा ही है, कविता नहीं। उसमें अद्वितीय तो शायद कुछ भी नहीं, हाँ मुझे बहुत प्रिय है कुछ विशेष कारणो से :

- **"वो दस का नोट"** मेरी सर्वप्रथम लिखी लघुकथा है;
- इसको लिखने के बाद मुझे अपनी लेखनी पर विश्वास हुआ और उसके बाद मैंने कुछ और भी लघुकथाएँ लिखी;
- जब मेरी पहली पुस्तक **"चिकनी चुपड़ी–कविताओं कि खिचड़ी"** प्रकाशन में जा रही थी, मैंने अपना ये पहला प्रयास, मेरी पहली लघुकथा लिखी थी, जिसकी प्रतिक्रिया बहुत अच्छी मिली, जिसने भी पढ़ा, बहुत सराहा। मैंने सोचा क्यों न इसी पुस्तक के अंत में अपनी इस कृति को डाल दूँ, पाठकों में मेरी संभावित अगली पुस्तक के लिए उत्सुकता एवं इंतज़ार बना रहेगा। यकीन मानिए, लोग अक्सर पूछते हैं, अगली किताब कब आ रही है। आप इसे विपणन रणनीति (मार्केटिंग स्ट्रेटजी) भी कह सकते हैं।
- जी हाँ.... ये मेरी कई दशक पुरानी आपबीती भी है।

लघुकथा होने के नाते यह कविता से भिन्न तो है ही।

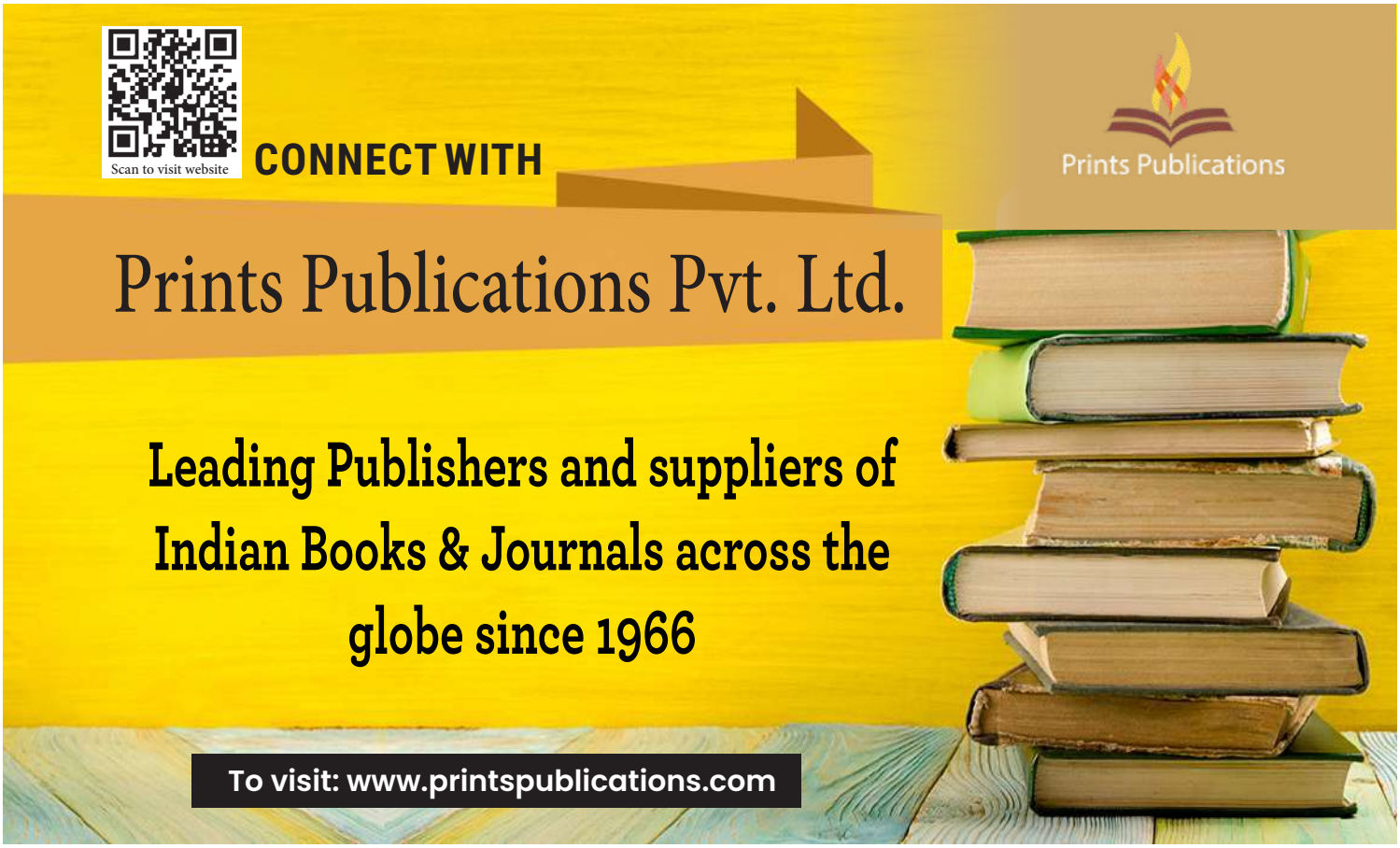

Advit Toys
Imagine
Play
Learn
Grow
Advit Toys is one of the leading manufacturers of 'Educational Toys', like Board Games, Jigsaw Puzzles, Activity Toys, and much more. It's a great way to let your child learn and grow while having fun. It's fun all day as your child learns all the way!
AVAILABLE ON
BuyBooks India.com | amazon | firstcry | Flipkart | meesho | JioMart
www.advittoys.com
4259/3, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi - 110002
contact@advittoys.com
+91 9953788888

SPOTLIGHT SESSION

"Azadi Ka Amrit Mahotsav : 75 Years of Book Publishing in India"

In August, Frontlist organised the Spotlight Session underlining the theme 'Azadi Ka Amrit Mahotsav: 75 Years of Book Publishing in India'.

The session emphasized the evolution of Indian Book Publishing from the time of independence to the present and its transitions over the next 25 years. It also discussed the recently published book "75 Years of Book Publishing in India" by the Federation of Indian Publishers.

List of eminent panelists that were a part of the session:

Dr K Sreenivasarao
Secretary, Sahitya Akademi,
Ministry of Culture,
Government of India

Mr Amish Tripathi
Author, Minister (Culture),
Indian High Commission, UK,
and Director, Nehru Centre, London

Mr Asoke K Ghosh
President Emeritus,
Federation of Indian Publishers

Mr Pranav Gupta
Co-founder of Frontlist Media (Moderator)

Conversation:

Pranav: Where does Indian Book Publishing stand today per its history?

Asoke: I believe we're standing on a good pedestal after 75 years. This year, according to our calculation and the Nielsen Report, we have published ~146,000 books in all Indian languages, including English. We have already published a market turnover of 74,600 crores, about $9.5 billion, and we shall cross 1,00,000 crores shortly. We have come a long way from 50 years, 60 years, and now 75 years. I would say a large number of about 20,000 publishers are actively publishing Indian books. We are also marketing and selling our books all over the globe as well. India is the world's second-largest English language book producer after the USA.

Pranav: FIP has recently published "75 Years of Book Publishing in India". What contribution will this book make to the advancement of the Indian publishing industry?

Amish: We need to discuss various issues as an industry; this is a high time to change. The number of titles is shorter: 146,000 were published in English, and we are the second largest in the UK now regarding the number of titles. India has gone ahead of the UK as well. It's a tough time for publishing in the West because COVID has also negatively impacted most of the publishers in India. GST has hit businesses, especially in trade publishing, and piracy has become an even more significant issue on online platforms.

We need the industry to come together and solve these issues. If all of us speak in unison, the government will certainly listen to our complaints on how the GST negatively impacts our industry, and the industry cannot build out the GST that should be resolved. Govt. can help with piracy issues. The French government has greatly supported the publishing industry in fighting piracy. If we all can work together, we will surely find solutions.

Pranav: If we resonate with Indian Book Publishing with 75 years of Azadi ka Amrit Mahotsav, how much have authors & publishers become liberated to share their thoughts more freely with the masses compared to the past years?

Dr Rao: We should have some publication and pricing policy in any country. These are the basic things which we need right now. Ashoke sir has said that ~1.46 lakhs books have been published this year, and it's tentative because we don't have control over publication in the country.

As per the Parliament Act, every publication must go to particular places not being sent by the publishers because many publications won't be published in the country without an ISBN. There is no accountability right now. Therefore, we need some publication policy and pricing policy. These two things are required to make it more visible in the global market. Even how many books we publish, Ashoke sir has told 1.46 lakhs. Where is that list right now? We don't have a list of 1.46 lakh books. So, if there is a policy, and the government is strict about it, there will be some uniformity. As far as publication is concerned as the pricing comes, piracy is the major issue. Sometimes I could see that many books come to me as a complimentary for our library. When I go to selection for the Raja Ram Mohan Roy Library Foundation book selection, I see a book with 100 Pages priced under Rs 450 and a book with 85 pages priced under Rs 600 sometimes. I don't know how it is priced, and these things must be discussed with the government. Yes, I agree it has been in discussion for many years, but nothing has worked out so far.

Scan to watch the full Spotlight session :

INDIA'S
#1 News E-portal For The Publishing Industry

FRONT LIST

OUR SERVICES

- Author Promotion
- Book Promotion
- Publisher Promotion

FOR ADVERTISING WITH US CONTACT AT:

FRONTLIST MEDIA

One Stop Destination to get insights from The Publishing World
Address - Frontlist Media, 4259/3, 3rd floor,
Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002
Email - media@frontlist.in

www.frontlist.in 9711676777

Scan to visit website

frontlistIN